1

चले चल कर थक गये हम, ना मिली मन्जिल भटकते।
अश्रु को स्वीकार कर लो, मग हमें दो हम बिलखते।
तुम छिपे ढूंढू, कहाँ पर, रोता मैं सिसकी भरकर।
प्यार की भूख मुझको, फेर मुँह छलिया न बनकर।

सृष्टि के मालिक रचियता, तेरे इंगित जगत चलता।
तपती धरती तू बरसे, करो कृपा दिल यह जलता।
बहें अश्रु इनको लख लो, प्रेम का तुम दान दे दो।
द्वार तेरे हम भिखारी, तम हटा कर ज्ञान दे दो।

डराती हैं रैन काली, जप रहा तुझे मैं माली।
फूल तेरे बाग के हम, तुम बिना लगती न लाली।
बैचेन मनुआ तुम बिना, आओ प्रभु दिल में रहना।
टूटी वीणा स्वर उठे न, अपना तो इतना ही कहना।

2

गमों के बादल हटाना, नयन मेरे बरसते।
प्यार से प्रभु देख लो तुम, तेरे बिना विलखते।
दुनिया अनोखी तेरी है, अजनबी बन नाचते।
प्यार की हम बूंद पाने, हर घड़ी हम मचलते।

माता पिता सब कुछ तुही, इस जगत की शान हो।
बह रहे यह नीर देखो, क्यों बने अनजान हो।
विवश हम कर्मों के बन्धन, जानते प्रभु कुछ नहीं।
कर कृपा मैं नाथ हारा, तू दिखा रस्ता सही।

शीश चरणों में धरूँ मैं, नीर से धोऊँ उसे।
कर्म हों शुभ मार्ग दे दो, कण्टकों में न फंसे।
जग का पालक हम बालक, ज्ञान का भण्डार तू।
आओ इस दिल में रहना, जिन्दगी की आस तू।

3

जानूँ कुछ ना करूँ अर्चना, मेरे जीवन का तू गहना।
दया बनाये रखना प्रियतम, थिर हो जाये तुझमें नयना।
इस जीवन की परम दृष्टि तुम, जिसे मिले सुख पाये नयना।
शीश झुकाऊँ चरण पडू. मैं, दूर मुझे तुम कभी न करना।

चाह प्यार की जियरा तरसे, दर दर भटकूँ खोजूँ सैंया।
तेरी यादों में कट जाये, तेरा ही जीवन यह सैंया।
नयना बरसे रिमझिम रिमझिम, याद लिये तेरी यह तरसे।
कृपा करो करूणा के सागर, तपती धरती तू ही बरसे।

अज्ञानी हम जाने कुछ ना, जीवन थोड़ा सारा सुपना।
पार लगा दो मेरी नैया, बिना तेरे कोई न अपना।
सकल सृष्टि के स्वामी हो तुम, घट घट बसते अन्तर्यामी।
नयनों में छवि तेरी नाचे, सुधि बुधि- भूँलूं भर लो हामी।

4

सांसे है जीना ही होगा, सुख दे दुख दे मर्जी तेरी।
टूटी वीणा पंचम गाये, मिल जाये यदि छाया तेरी।
बालक तेरे भूल न हमको, अंखियां रोती यादें कर कर।
जाऊँ कहाँ कुछ भी न दीखे, ठोकर खाता मैं पग पग पर।

बहते आंसू तुमको खोजें, कभी नहीं भूले तुमको हम।
बस जाओं प्रभु मेरे दिल में, मगन रहे तुझ में ही हरदम।
डोल रही यह मेरी नौका, सब ओर अंधेरा छाया है।
सांस पुकारे तुमको ही बस, जियरा मेरा घबराया है।

नाम सुधा तेरी मैं पी कर, चलूँ कर्म भी शुभ मुझसे हों।
विवश यहाँ अज्ञानी हम हैं, तुम ही जीवन की डोरी हो।
करूँ अर्चना सूखी बगिया, चाह प्यार की दे तू माली।
जीवन सारा बीता जाता, बहते आंसू झोली खाली।

5

हरि तुम बिन यह नयना रोये, नाथ शरण तुम अपनी ले लो।
दास तुम्हारा जनम जनम का, प्रभुजी मुझको अब अपना लो।
इन सांसो में बसे तुम्ही हो, मात पिता सब कुछ तुम ही हो।
तुम ही सर्जक तुम ही पालक, प्रभु जी मुझसे खफा नहीं हो।

सदियां बीती तुझे न पाया, जीवन सारा व्यर्थ बिताया।
नयन बसो दुख भूलूँ सारा, मेरी रोवे हरपल काया।
जग में भटक भटक हम जावें, तृष्णा बढ़ती कौन बुझावे।
बिना ज्ञान यह डूबे नैया, करूँ विनय तू पार लगावे।

कृपा सिन्धु तुम जीवन दाता, अन्तर्यामी भाग्य विधाता।
चरण पडू. ना रूठो मुझसे, तुम बिन कुछ ना मुझे सुहाता।
बढ़ा विरह मिट जाये पतंगा, धन्य होय यह जीवन गंगा।
तेरी प्रीति बिना सब झूठा, प्रभु जी वर दो मन हो चंगा।

6

क्या सोंचे मन तू है पागल, घूम रहा तू यह है जंगल।
इधर उधर भटके कितना ही, हरि सुमरे बिन होय न मंगल।
आशा की ले गठरी चलते, बहके कदमों को ले गिरते।
जायें कहाँ दीखे नहीं कुछ, अपनी किस्मत को ले रोते।

हरि जप ले पागल तू मनुआ, जब आये तब हम थे रीते।
साथ नहीं होगा जायेंगे, कुछ ना होगा तेरे चीते।
हरि जपता जा तू बहता जा, न कोई किनारा तेरा है।
विधि के यहाँ खिलौने हम है, जोगी बाला यह फेरा है।

यहाँ शिकायत को कर मत तू, अपनी धुन में सब रहते है।
हरि से प्रीति यहाँ हो जाती, काल यहाँ तो फिर भागे है।
पागल मन को समझा मत रो, आनी जानी यह दुनिया है।
विधि ने खेल रचा वह देखो, कर्ता ना बन नादानी है।

7

दुख यहाँ करना नहीं मन, खेल प्रभु का चल रहा है।
स्वप्न सा सारा जगत यह, देख सच क्या कुछ रहा है।
पल मिले वह देख ले तू, बस नहीं यह जान ले तू।
बह रही नदिया निरन्तर, हरि हिय बसा खेल ले तू।

कुछ समय का खेल सारा, बीतें पल क्यों तू हारा।
बन कर लहर बहे जा तू, जान निज को सृष्टि प्यारा।
जो मिले बाजा बजा ले, डूब उसमें स्वर उठा ले।
जान ले अपनी विवशता, गा नियति संग मुस्कराले।

मत शिकायत कर किसी से, वासना का खेल सारा।
कौन किसका है यहाँ पर, नाचो बन हरि का प्यारा।
चैन भी तुझको मिलेगा, दूर डर सारा भगेगा।
क्यो होता इतना कातर, जप उसे संग वह चलेगा।

8

तुम बिन हमको कुछ ना दीखे, राखो लाज हमारी प्रभु जी।
बेबस हुआ जगत में भटकूँ, कैसे बनूँ तुम्हारा प्रभु जी।
नयना यह आंसू ढरकाये, प्राण पुकारें तुझे बुलायें।
विधी न जानू रोना जानू, कृपा करो जो तुझको पायें।

दीनबन्धु तुम जग के स्वामी, सर्जक मेरे औघड़दानी।
झोली लिये खड़ा मैं दर पर, तुमसे प्रीति बढ़े जग फानी।
अज्ञानी मैं कुछ ना दीखे, आँसू मेरे झर झर बरसे।
पाप पुण्य सुख दुख का मेला, मुझे बचा लो जियरा तरसे।

पांव पकड़ता सुन लो मेरी, आशाओं की होली जलती।
छाये रहो नयन में मेरे, करूँ यहीं मैं तुमसे विनती।
जीवन तेरा कौन यहाँ मैं, कौन ज्योति जो घट में जलती।
बना बाबरा दर दर डोलूँ, प्यार हमें दे आँखें तकती।

9

कितने फूल खिले मुर्झाये, क्या हिसाब इसका जग में है?
सृष्टि रचियता प्यार चाहते, इसके बिन जीवन फीका है।
जग के पालक अन्तर्यामी, तुम हो नाथ सभी के स्वामी।
याद तुझे कर अंखिया रोती, फेरो ना मुँह मेरे स्वामी।

निशिदिन तेरे ही गुण गाये, तुझे न भूलें प्रीति बढ़ायें।
आनी जानी इस दुनिया में, बसो नयन में जिय हर्षाये।
मेरे खेवट पार लगा दे, डगमग डोले मेरी नैया।
जी मेरा बैचेन हो रहा, कहाँ छिपे तुम कृष्ण कन्हैया।

करूँ अर्चना तुझे रिझाऊँ, विधि न जानूँ तुझे मनाऊँ।
अज्ञानी मैं ज्ञान तुम्हारा, सांस सांस में तुझे बुलाऊँ।
झर झर नीर बहें यह हरपल, तुझ चरणों में इसे चढ़ाऊँ।
प्रभु मेरे नयनों को लख लो, तुझे न भूलूँ प्रीति बढ़ाऊँ।

10

हरि तुम बिन यह जियरा भटके, कैसे पाँऊ संशय खटके?
अगम अगोचर पार न तेरा, दया करो यह भीगे पलके।
मुझे उबारो डगमग नैया, चल चल हारा तुझे न पाया।
करूणा सागर पालन कर्ता, जीवन सारा व्यर्थ बिताया।

मान न चाहूँ कुछ ना चाहूँ, प्यार तुम्हारा हरपल चाहूँ।
मत रूठो तुम मेरे देवता, नयनों के यह अश्रु चढ़ाऊँ।
दो पल का जीवन जाता है, तुम बिन यह जिय घबराता है।
बाट निहारूँ कैसे पाऊँ, मनुआ भटक भटक जाता है।

मेरे प्राण पुकारें तुमको, इन नयनों में तुम बस जाओ।
सुधि बुधि भूल निहारूँ तुमको, नीर बहे कितना तड़फाओ।
जीवन दाता भाग्य विधाता, शीश चरण रख विनय करूँ मैं।
जब तक जीवन तुझे रटूं मैं, कुछ ना जानूँ कहाँ गिरूँ मैं?

मेरी सांसे सब हो अर्पित, पल भर भी मैं ना विसराऊँ।
बल ना साहस अज्ञानी हूँ, कुछ ना जानूँ तुझे मनाऊँ।

11

जी नहीं लगता हमारा, निज चरण में जगह दे दे।
अबल हम अज्ञानी प्रभु जी, कृपा अपनी हमें दे दे।
प्यार को भटके बहुत हैं, रूष्ट मुझसे तुम न होना।
अश्रु यह अंखिया बहाये, इस विनय को ईश सुनना।

फूल तेरे बाग के हम, जा रही यह जिन्दगानी।
देख ले तू रूक हमें, कुछ ना थिर दुनिया फानी।
गीत गा गा हम थके है, जाने न तेरा ठिकाना।
बन पंतगा मिट सकूँ मैं, वर मिले बीते फसाना।

प्यार का तू जाम दे दे, यह कण्ठ प्यासा तृप्त हो।
तेरे बालक हम प्रभु हैं, इस जिन्दगी का गीत हो।
चल गिरूँ तुमको न पाऊँ, जिन्दगी कैसे मनाऊँ?
सांझ ढलती जा रही है, करो कृपा तुमको पाऊँ।

12

मन बैरागी हुआ बाबरा, ईश कृपा कर तुझे बुलाता।
कंट लगे मग में गिर जाता, देखूँ कहाँ न कोई आता।
पल दो पल का जीवन लड़ते, इन नयनों से आँसू बहते।
मिट जाना सब इस दुनिया में, धन्य प्रेम गंगा में बहते।

जीवन के कुछ पल है बाकी, तुझे पुकारूँ मैं दिन राती।
दया करो कट जाये रस्ता, मन ना माने आँखे रोती।
पाप पुण्य सुख दुख का मेला, करूँ अर्चना हाथ जोड़कर।
पार लगा दो नैया खेवट, सब कुछ तुम मेरे बन्शीधर।

बस जाओ तुम इन नयनों में, नीर बहें तेरी यादों में।
सब कुछ तुम बिन नीरस लगता, इस जंगल में भटक रहा मैं।
प्यासा झोली खाली मेरी, कहाँ लगाऊँ फेरी तेरी।
सब जगह पर राज तुम्हारा, चरण पडू. ना कर अब देरी।

13

जीत तेरी हार तेरी, खेला प्रभु जी यह तेरा।
मन का न विश्वास टूटे, तू मेरा मैं हूँ तेरा।

सतायें हमें जग के दुख, नयन यह आंसू बहायें।
याद कर तुझ ओर देखें, पार नौका तू लगाये।

अश्रु की कीमत नहीं कुछ, चाहता फिर भी बहुत कुछ।
नाथ मुझको माफ करना, सिर झुका मैं हूँ नहीं कुछ।

तुझ कृपा की भीख माँगू, इस जग का तम है घेरे।
अश्रु से पूजा करूँ मैं, और ना कुछ पास मेरे।

चल रहा नहीं जानूँ मैं, कैसे मिलेगे हम तुझे।
पीड़ इस दिल में उफनती, कर कृपा मग दे मुझे।

अर्चना स्वीकार कर लो, अबल हूँ इतना समझ लो।
प्राण तुमको ही पुकारे, नयनों से मुझको लख लो।

14

किसको कहते यहाँ पर, सुनने को कौन है?
मेरा सहारा बस तू, नभ भी यह मौन हैं।
आंखे बरसती मेरी, कहते किसे दिल की।
तेरे चमन के माली, फूल हम सुन दिल की।

चलते है दर्द लेकर, न होश तुझे खोकर।
कहाँ पर तुझे पुकारे, कण्ठ आता भर भर।
तू थाम ले यह बैयां, कटे मग यह सैयां।
कांटो से हुआ जख्मी, न रूठ रोता जीया।

करते हैं याद तुमको, नयना नीर बहते।
आशा की तू किरन है, थके तुमको कहते।
गाते है गीत तेरा, तुझे पुकारते हैं।
जायेंगे क्या तड़फते, राह निहारते है।

15

आना जाना इस दुनिया में, जीवन का खेल निराला है।
मत पकड़ कूल को तू पागल, बहता जा ना कुछ अपना है।
पल दो पल के खेल निराले, हँस ले या आँसू ढलकाले।
धूप छांव के इस आंगन में, पागल हरि से सुरति लगाले।

पाप पुण्य सुख दुख का मेला, कुछ ना जाने बड़ा झमेला।
हरि चरणों में प्रीति लगा मन, संध्या आती जान अकेला।
इस जग का सब ताप मिटेगा, जी ले उसको हृदय खिलेगा।
दुख की इस बहती नदिया में, जान उसी से प्यार मिलेगा।

हरि हरि कहते जीवन बीते, हरि बिन जान यहाँ हम रीते।
ढलकें आंसू हरि यादों में, धन्य सुधा उसकी जो पीते।
प्रभु बालक हमको अपना लो, अज्ञानी है ना ठुकराओ।
अंधियारी गलियों में भटके, विनय करूँ मुझको अपनाओ।

बहते आँसू हरपल मेरे, किसे कहूँ यह जीवन दलदल।
ढपली सबकी अपनी अपनी, मिले प्यार जाये जीवन खिल।
हरि ओम हरि ओम ना भूले, जपे निरन्तर प्रभु जी तुमको।
मेरे घट में सदा रहो तुम, कट जाये मग वर दे हमको।

16

जीवन पथ पर चल चल हारा, मिलना हुआ न तुमसे राम।
नयना रोते यह ना माने, सुनो यह विनती मेरे राम।
सकल सृष्टि के स्वामी हो तुम, दया करो करूणा के सागर।
याद तुम्हारी आवे हरपल, जियरा मेरा आता भर भर।

न हमको मग कोई सूझता, दशों दिशायें तुझसे गूंजे।
बहरा हुआ हाय क्यों मैं भी, तेरी मुरली हरदम बाजे।
ढलती संध्या तुम्हे निहारूँ, जला ज्योति यह जीवन तड़फे।
छिपो नहीं तुम प्यारे छलिया, प्राण प्यार पाने को तड़फे।

खड़ा हुआ मैं शीश झुकाये, तुझे याद कर आंसू आये।
मेरे जीवन का श्रृंगार तू, विरह मुझे दिन रात सताये।
सब सूना प्रभु तुम बिन लागे, अबल नाथ मैं तुही सहारा।
कृपा करो हम दास तुम्हारे, पार लगा नौका मैं हारा।

17

बिना तुम्हारे प्राण क्यों, किसकी प्रतीक्षा कर रहे?
निज चरण में तुम जगह दो, यह चाह नयनों में रहे।
दीखता कुछ भी नहीं है, सुनसान है मेरा जहाँ।
स्वर अधूरे रोये वीणा, खोजता तुम्हें हो कहाँ।

कैसे जोडू. मैं रिश्ता, गली अन्धी मैं भटकता।
चाहता पल भर न विसरूँ, वर दे यह पाऊँ रस्ता।
थाम ले बढ़कर मुझे तू, मैं भुला पाता नहीं गम।
नयन यह आंसू बहाते, प्रभु लड़खड़ाते हैं कदम।

चले चल कर थक गये हम, ना पता कहाँ जायेंगे?
पीड़ है दिल में उफनती, घुट के क्या रह जायेंगे?
जाओ नहीं तुम छोड़ कर, यह डर रहा मेरा जिया।
मग प्रभु दो रस्ता दूभर, रूठो नहीं प्यारे पिया।

18

अबल हम तुम कृपा करना, नयन सावन से बरसते।
अपना साया हमको दो, अनजान गलियाँ भटकते।
खोजता तुमको फिरूँ मैं, पर नजर आते नहीं।
सब जगह है राज्य तेरा, क्यो प्राण भटके फिर कहीं।

नयन मग तेरा निहारे, सांस यह तुमको पुकारे।
आ मिलो यह कण्ठ प्यासा, जिन्दगी की शाम सुधरे।
तू बता किससे कहें हम, दन्श पग पग पर लगे हैं।
आस तू ही जिन्दगी की, द्वार तेरे हम खड़े हैं।

जिन्दगी का गीत तू ही, प्रभु बसो इन नयन में।
मेरी बगिया के हो माली, प्रभु राखना निज शरण में।
इस अन्धेरी रात में प्रभु, चाहते तेरा सहारा।
नयन को न फेर लेना, मैं चरण की धूल हारा।

19

इस जीवन को देने वाले, ज्ञान ध्यान सब छूटा जाता।
कृपा मिले तेा जिय हर्षाता, रक्षा मेरी करो विधाता।
मेरे जीवन की तुम आशा, नयना तुझे पुकारें रोकर।
तुझे याद करता मैं हरपल, कहाँ छिप गये हो वन्शीधर।

नीर गिरायें नयना झर झर, तुम बिन कोई नहीं रखैया।
जियरा मेरा थर थर कांपे, खे दे नाविक मेरी नैया।
चल चल थका तुम्हे न पाया, जीवन सारा ही कुम्हलाया।
अबल नाथ हम दास तुम्हारे, दे दो मुझको अपना साया।

जीवन की तुम ही सुगन्ध हो, फूल बाग तेरे के माली।
मात पिता गुरू सखा तुम्ही हो, बचा डरावें राते काली।
नहीं अर्चना की विधि जानूँ, नयना रोवें तुझे पुकारूँ।
चरण पडू. ना रूठ विधाता, प्रभु हरपल मैं तुमको सुमरूँ।

20

मन अपना कैसे बहलाऊँ, तुम बिन चैन कहीं ना पाऊँ।
जग के सर्जक तुम हो पालक, चाह प्यार तेरा मैं पाऊँ।
ज्ञान ध्यान कुछ भी ना जानूँ, अज्ञानी हूँ तुम्हे पुकारूँ।
नयना यह आंसू ढलकाये, लाज रखो तुमको मैं सुमरूँ।

ऊसर जमी फसल ना उपजे, कुम्हलाये तुम बिन जीवन।
निकले बिन बरसे तब बादल, नयना देखे जावे सावन।
मेरे जीवन मेरी आशा, जीवन तुम बिन हुआ तमाशा।
चरण पडू. ना मुझको भूलो, मेरी हर लो नाथ निराशा।

चल चल गिरूँ अबल मैं हारा, तुम हो सबके भाग्य विधाता।
जोड़ हाथ मैं ईश खड़ा हूँ, तुम हो सबके भाग्य विधाता।
किन सुपनों में हाय भटकता, टूट रहा क्यों तुझसे रिश्ता।
अंधियारे में तड़फ रहा हूँ, पथ दर्शा दो विनती करता।

21

हरि प्रीति बढ़ा तू भूल जगत, मेला दो दिन का मन सुन ले।
सबके अपने अपने सुपने, न कोई सुने कितना रोले।
मिल कर सब जाते बिछुड़ यहाँ,रोते हंसते ना चैन यहाँ।
सुपना कैसा पागल मन यह, आशाओं के अम्बार यहाँ।

ढरके आंसू जाती संध्या, नहीं प्यार मिला खोया पिया।
हरि में मन प्रीति लगा पागल, जायेगी जाने दे संध्या।
जीवन के भाग्य विधाता सुन, तम विखरा जिय घबराता है।
चाहें यादें ले हर्षाये, नयना यह नीर बहाते हैं।

कट जाये सफर तेरे गुन गा, यह विनय करूँ मेरे सर्जक।
कठपुतली हम तो तेरी हैं, तुम कष्ट हरो हे दुख भंजक।
अज्ञानी कुछ भी ज्ञान नहीं, गलियों में भटकूँ भान नहीं।
बिन तेरे जियरा घबराये, तुम आन मिलो अब छिपो नहीं।

हरि कृपा बनाये रखना तुम, मैं अबल नाथ तुम शक्तिमान।
तू पार लगा दे यह नौका, ठोकर खाऊँ ना हमें ज्ञान।
नयनों में तू ही बसा रहे, यह जीभ सदा सुमरे तुमको।
टेढ़ी मेढ़ी इन गलियों में, न भटकूँ विनय करूँ तुमको।

22

हरि बिन चैन नहीं मन पावे, उलझ उलझ हरपल यह जावे।
पार लगा दो मेरी नैया, करूँ विनय ना जिय भरमावे।
कितने सुपने उठे गिरे प्रभु, मृगमरीचिका जग की पीड़ा।
ठोकर खा खा गिरूँ धरा पर, समझ न पाऊँ अन्धी क्रीड़ा।

जगत नियन्ता अबल नाथ मैं, लक्ष्यहीन सा डोलूँ जग में।
खेवट बन कर हरि तुम आओ, कैसे पाऊँ बल ना मुझमें।
ठोकर खा खा गिरूँ धरा पर, जियरा मेरा आता भर भर।
नयना तेरी करें प्रतीक्षा, लाज रखो मेरी वन्शीधर।

तेरी रहमत का प्यासा जग, कृपा होय बरसे जल झर झर।
मेरे दिल में सदा रहो तुम, चाह यही मेरे वन्शीधर।
काली रातों का प्रकाश तू, विनय न भटकावे यह माया।
सुरति रहे हरपल प्रभु तेरी, तपस मिटे मिल जावे छाया।

23

दिन आता है वह जाता है, क्या कहें समझ ना आता है।
मन को बहलाते हम फिरते, मिलता पर नहीं ठिकाना है।
कैसे जीयें तुम बिछुड गये, दिन रात सांस बस तुझे जपे।
यह नीर बहाती हैं अंखियाँ, बतला दो तुम किस धाम छिपे।

पागल मन डोले इधर उधर, कल की न जाने कोई खबर।
कैसे समझाऊँ इस दिल को, गिरता ही जाता हूँ थककर।
प्यारी प्यारी बातें करते, तेरी बगिया में रस लेते।
ऊसर यह जमीं हुई कैसी, ना फूल खिले रोते रहते।

अपने चरणों में रखो मुझे, मैं हार जगत द्वारे आया।
करूणा के सागर कहलाते, चाहूँ दे दो अपना साया।
तुम अगम अगोचर शक्तिमान, नादान अबल तू मुझे जान।
मेरी ना और परीक्षा लो, मैं टूट चुका बस यही जान।

24

क्या सोंचे पागल, बहते से बादल।
आज यहाँ अब हैं, कित जाने हो कल।
ना अपनी मर्जी, सब उसकी मर्जी।
रूलाये हँसाये, चलेगी उसी की।

उड़े तू वहाँ तक, पवन साथ देवे।
नहीं कर शिकायत, वही नाव खेवे।
कठपुतली उसकी, नचावे है नाचो।
न खुद को फंसाना, वही नाम सांचो।

झुका शीश अपना, जगत जान सुपना।
कुछ पल का खेला, ना कोई अपना।
नयनों के अपने, तू अश्रु चढ़ा दे।
गूंजे है अनहद, खुदी को मिटा दे।

25

तुम्हारी शरण में, हम आये मुरारी।
न हमें भूल जाना, जिया मेरा भारी।
नहीं राहें मिलती, भटकते हैं जग में।
हुआ मनुआ पागल, डूबता है गम में।

नियन्ता हो जग के, ना ठुकरा हमें तू।
मेरी आंख भीगी, हमको देख ले तू।
जपते तेरा नाम, तेरा प्यार चाहे।
धड़कता है यह दिल, यह अनजान राहें।

हम कैसे दिखाये, यह जख्मी हुआ दिल।
झरे मेरे आंसू, मैं हो रहा गाफिल।
तुम्हारे चरण में, हम पड़ते मुरारी।
पुकारूँ तुम्ही को, जगत से मैं हारी।

मेरी लाज रखना, बहें मेरे नयना।
मेरी जिन्दगी का, तू ही नाथ गहना।
सुपने यहाँ टूटें, सब मिलकर विछुड़ते।
दिल में भरी पीड़ा, यह अरमा सुलगते।

अपना कहें किसको, यह तन भी है जाता।
ना इतना रूलाओ, चाह तुमको पाता।
न भटका हमें ईश, गिर गिर हूँ जाता।
सभी मेरा तू ही, पिता और माता।

करें तेरी पूजा, नहीं जाने विधि को।
नहीं रूठना ईश, मैं मानू तुझी को।
झुकाये खड़े शीश, करें हम प्रतीक्षा।
सदैव कर्म शुभ हों, मिले यही शिक्षा।

26

मन रोये क्यों , मन रोये क्यों, अपना तू दर्द दिखाये क्यों?
यह चन्द दिनों का है मेला, मर्जी उसकी घबराता क्यों?
सांसों में प्राण बसे सबके, आती जाती न रूकती वह।
ना रूकना लक्ष्य यहाँ पागल, आता है सागर मंजिल वह।

कुछ मिले यहाँ पल तू जी ले, दुख आये उनको तू सह ले।
बगिया उसकी हम फूल यहाँ, जैसा राखे वैसा रह ले।
अपना ना दर्द दिखा पगले, बन उसे तपस्वी तू सह ले।
तपती धरती तब मेघ घिरे, यह जान नियति के संग बह ले।

जब घुटा घुटा जीवन जाता, न दुख का कोई सिरा पाता।
तू आँख मीच अन्तस में जा, वह छिपा हुआ सबका दाता।
मन डूब उसी में डूब यहाँ, सब दन्श मिटे मन हल्का हो।
चहुँ ओर भाग ले कितना ही, बिन कृपा न उसके सुबह हो।

27

राम तेरी हम शरण हैं, लाज मेरी राखना।
दया का सागर तुही है, दास को तुम देखना।
तुम बिना सूना जहाँ है, प्यार को दिल तड़फता।
चल रहे अनजान राहे, पथ दिखा दिल धड़कता।

तू बजा बन्शी मधुर, भीग जाये प्राण यह।
नयन यह राहे निहारे, डगमगाती नाव यह।
मैं पुकारूँ रो यहाँ बस, तम यहाँ दीखे न कुछ।
अर्चना की विधि न जानूँ, हिय बसो न चाहूँ कुछ।

कुछ पलों का खेल सारा, तुम बिन कुछ न हमारा।
मेघ बन बरसो धरा पर, मिटे फिर ताप सारा।
जगत पालक तू रखैया, कहाँ छिपे कन्हैया?
नयन से हैं नीर गिरते, चाहता नाथ छैयां।

28

जगत पालक हो रचियता, तुमको हम प्रणाम करते।
मिले हरपल प्यार तेरा, नाथ तुमको हम सुमरते।
नीर यह अंखियाँ बहाये, तुम बिना किस ठौर जायें।
पीड़ जो दिल में सुलगती, बरस कर तू ही बुझाये।

चाह बस इतनी हमारी, उठे तेरे गीत हरदम।
यह लगे तुम साथ मेरे, कृपा तेरी मिटते सब गम।
घूमता अज्ञान में मैं, ले चलो नौका हमारी।
नाथ मैं पूरा अनाड़ी, पथ हमें दे दो मुरारी।

खेल दो पल का यहाँ पर, फिर न जाने हो कहाँ पर।
तुम दया रखना सदा ही, गिर रहे यह नीर झर झर।
अपने मन्दिर में जगह दो, जाये यह कट उम्र सारी।
नयना बस जाओ मेरे, इस जगत से मैं हूँ हारी।

29

चलते यहाँ सब जा रहे, ना जानते मन्जिल कहाँ?
देखो बुलाये दूर से, हरि भूल कर खोये कहाँ?
नाचे कठपुतली बन कर, पल दो के मेहमां यहाँ।
मैं का नहीं नामों निशा, पी ले अमी जिसका जहाँ।

गाओ हरी के गीत को, यह कटेगा लम्बा सफर।
थकहार कर तू देख ले, बिन उस नही मिटती फिकर।
विष पी लुटा मुस्कान को, धीरज धर समझा ले मन।
सच देख सुपना है जगत, जाती सुबह ढले है दिन।

छवि नयन जो उसकी बसे, ना कर फिकर वह ही करे।
जैसा नचाये नाच ले, उसको रटो नयना झरें।
आटे में काँटा है यहाँ, क्या आस ले जग से चिपा।
सबको नमन कर प्यार दे, सब ओर वह अन्तस छिपा।

30

जग में भटक रहा जग मालिक, नहीं ठिकाना मेरे साहिल।
जीवन तेरा तुझे समर्पित, कुछ ना जानूं होता गाफिल़।
प्यार हमें दे राह निहारें, खिले फूल हम तुझे पुकारे।
जीवनदाता तुम हो पालक, पथ दर्शा दो जीवन निखरे।

झरती इन आंखों को देखो, अंधकार में तुम्ही किरन हो।
कहाँ जायें कुछ भी न सूझे, पतझड़ का तुम ही बसन्त हो।
अबल नाथ मैं सबल नाथ तुम, द्वार पड़ा मैं मुझे थाम लो।
डूबे नैया पार लगा दो, ठुकराओ ना प्रभु अपना लो।

मधुर सुनूँ बन्शी को तेरी, मिट जाये सब जग की केरी।
इस धुन को सुन खोई मीरा, सब गोपियाँ हो गई चेरी।
प्यासे कण्ठ माँगते पानी, जग में तू ही औघड़ दानी।
वरषा मेघ खिले यह धरती, तुझ सा नहीं जगत में सानी।

31

चरण पड़े हम नाथ थाम लो, इस जीवन को देने वाले।
आंसूँ की गंगा बहती है, जियरा धड़के ओ मतबाले।
करे अर्चना तुझे रिझाये, विधि ना जाने कैसे पायें।
घूम रहे अज्ञान तिमिर में, मिले कृपा तो पथ को पायें।

चल चल हारा तुझे न पाया, मुझे डरावे तेरी माया।
पाप पुण्य सुख दुख का मेला, लाज रखो प्रभु दे दो छाया।
अगम अगोचर पार न तेरा, बिन कृपा नहीं टूटे घेरा।
तेरी राह निहारे नयना, तिमिर छटे तब होय सबेरा।

घट घट वासी जानो सबकी, अंखियाँ मेरी भई उदासी।
कुछ भी तुम बिन नहीं सुहावे, जिय न लागे होवे हांसी।
अन्तर्यामी जग के पालक, देख हमें लो तेरे बालक।
अंखियाँ अश्रु बहावें हरपल, ना रूठो तुम मेरे मालिक।

32

जो भी पल है देख सामने, क्यों अतीत में जावे मन।
सुपना सा सब बीता जाये, नहीं बचेगी कोई धुन।
दुनिया रंग बदलती जाये, प्यार करे फिर ठुकराये।
किसके रोके कौन रूका है, लहरों सा खोता जाये।

तृप्त धरा क्या कभी कहाये, नयना आंसू बरसाये।
अनजानी राहें इस जग की, पता नहीं कब खो जाये।
उठे तरंग फिर गिर जाती है, दुनिया आनी जानी है।
व्याकुल मनुआ सोचे पागल, नीर बहावे हरपल है।

गीत सुना दे ऐसा कोई, टूटा दिल जोड़े कोई।
विछुड़ गया जो प्रियतम प्यारा, बिन उसके अंखिया रोई।
प्यार बढ़े तो मेघा बरसे, सुन्दर सुन्दर फूल खिलें।
लुटा यहाँ सौरभ इस जग को, धन्य धार में बहे चले।

33

हरि ओम जपो सुमरो हरपल, ना जाने फिर क्या होगा कल?
संध्या देखो ढलती जाती, प्यासे प्राणों को दे दे जल।
आशा के दीप जला पागल, इस दुनिया में तू डोल रहा।
खाता रहता तू ठोकर है, फिर भी हरि को भूल रहा।

ना यहाँ किसी का है कोई, पल दो पल का यह मेला है।
तू प्यार बढ़ा मिल ले सबसे, यह जान सुपन सा खेला है।
हरि से अपना तू प्रेम बढ़ा, बदला जाता हरपल मौसम।
आदि अन्त का वह ही सच, कर नहीं शिकायत पी ले गम।

डोले कितनी ही नाव यहाँ, हरि नयनों में यदि बस जाये।
सांसे उसका ही गुन गायें, तूफानों से ना घबराये।
तपती धरती का जल अमृत, जल प्यार, प्यार को सब तरसे।
पल दो पल के इस जीवन में, ना वैर बढ़ा जीवन हरषे।

मन प्रीति बढ़ा ना वैर बढ़ा, हरि तुझे मिलेंगे दीप जला।
इस रंग बदलती दुनिया में, हरि को भज ले मन छोड़ गिला।

34

हे ईश कृपा करना हम पर, अज्ञानी बालक तेरे हैं।
जगती का तू ही है प्रकाश, तम दूर करो भटकाता है।
चरण पड़े भक्ति वर दो, यादों में आंसू बहने दो।
तुम बिन सब कुछ फीका लागे, मैं विनय करूँ निज साया दो।

तड़फे तुम बिन मेरा यह दिल, चल चल हारे न प्यास बुझी।
यह प्राण पुकारे तू मेरा, जल रही शमा अब वुझी वुझी।
ले ले आशा टूटा यह दिल, संध्या ढलती जाती हरपल।
न प्रेम प्रीति में डूब सका, निर्मोही अब तू कर न कल।

देखें किस ओर प्रभु तुमको, तेरी ही तो सब माया है।
पथ दर्शा दो मैं अबल नाथ, चहुँ ओर अंधेरा छाया है।
झोली खाली ना पुष्प खिले, मै पडू चरण क्यों नहीं मिले।
दे दो मन्दिर का इक कोना, कट जाये जीवन शाम ढले।

35

ईश तेरे दास हम है, जानते अपनी डगर ना।
दया तेरी चाहते हैं, भीगे मेरे यह नयना।
चल यहाँ हारे जगत में, प्यास न बुझ पाई मन की।
नयन तुमको खोजते है, प्रभु मिटा दो चुभन दिल की।

चाह तुझे लिखता पाती, बीतता दिन शाम आती।
ना ठिकाना जानता मैं, आँख यह आँसू बहाती।
चरण तेरे आ पड़ा हूँ, ना नज़र को फेरना तुम।
जिय भर भर मेरा आता, प्रभु हरो अज्ञान को तुम।

मैं भिखारी तुझ दया का, ले फिरूँ झोली है खाली।
कैसे समझाऊँ मन को, तुम संभालो अब माली।
नीर बहते हैं नयन से, प्यार से बंशी को सुनते।
क्या गुनाह न जानते हम, छिप गये हम तो भटकते।

36

इतनी बात बनाते हम हैं, नहीं मौन को अपनाते है।
जानो इच्छा सबकी अपनी, व्यर्थ उलझते ही जाते हैं।
करो भरोसा उस ईश्वर पर, चोंच दई वह चुग्गा देगा।
ले आये जो भाग्य धरा पर, कर सन्तोष सुखद फिर होगा।

खेल यहाँ कुछ पल का राही, धूप छाँव सुख दुख का मेला।
बीता जाता सारा सुपना, समझा ले मन कर ना मैला।
कठपुतली हम वही नचाये, देख मौन खेल खिलाये।
मर्जी हरि की कित ले जाये, माने मन तब ही सुख पाये।

लहर बना सागर में बह ले, जान नहीं कुछ भी बस अपने।
प्रीति लगा ले हरि से मन तू, सबके अपने अपने सुपने।
नीर वहें हरि को ही दे दे, सब उसका चाहे जब ले ले।
सुरति हरपल यदि उसकी, दन्श लगे जग के हंस पी ले।

37

तेरी राह निहारूँ भगवन, प्यार तुझे देना ही होगा।
सूखी धरती तड़फ रही है, बन कर मेघ बरसना होगा।
अनजाना पथ का मैं राही, इस जीवन का तू ही माही।
तुम बिन नैया पार लगे ना, दीप जला दो दीखे राही।

बस जाओ मेरे नयनों में, सब सुधि भूल तुझे ही सुमरूँ।
मुरझाई मेरी जो बगिया, खिला उसे ना तुमसे बिछडू.।
उलझ रहे कांटो में फंसकर, अज्ञानी पर तेरा बालक।
बरस रहे नयनों से आंसू, दीन बन्धु तुम मेरे सर्जक।

प्राणों के प्रिय भूल हमें ना, पार लगा दे किस्ती मेरी।
तुम बिन रोयें अंखिया हरदम, बीते संध्या कर ना देरी।
दास तुम्हारे हार गये हम, नहीं परीक्षा मेरी अब लो।
स्वीकार करो बहते आंसू, अब चरणों में प्रभु तुम रख लो।

38

आयेगा कोई जायेगा, जीवन का चक्र चलेगा यह।
आँसू ढरकाले या हँस ले, ना चक्र रूकेगा मनुआ यह।
पल दो पल का जीवन पागल, तू व्यग्र हुआ करता क्रन्दन।
मन में हरि को यदि बसा सके, महके उजड़ा फिर यह उपवन।

कितनी सुन्दर दुनिया पागल, तू सोंच सोंच होता बोझिल।
सागर में तू है लहर यहाँ, तू जान तेरा सागर सम्बल।
कुछ पल का खेल यहाँ नाटक, आते जाते चलती उसकी।
मैं हटा समझ तू कठपुतली, नाचे जा मर्जी है उसकी।

ढरके आंसू तू चढ़ा उसे, जपले उसको मन वसा उसे।
जग का पालक सर्जक वह ही, धर धैर्य भुला ना यहाँ उसे।
सुमरो उसको तम कट जाये, सूखी बगिया फिर लहराये।
बन जाती तब मंजिल राहें, मन ना भटके हरि मिल जाये।

39

किसको कहनी अपनी पीड़ा, कौन सुनेगा रोवे जिवड़ा।
दो दिन की यह खेल कहानी, लीन कहाँ होवेगा जिवड़ा।
हरि हरि सुमर हरी की माया, नजर उठा सब वह ही छाया।
दीप जला ले दिल में उसका, जायेगी हट काली छाया।

आना जाना खेल उसी का, वही नाचता लहरें उसकी।
सच हम तो बस है कठपुतली, ना कर शिकवा मर्जी उसकी।
धूप छाँव का खेल खिलाये, कभी रूलाये कभी हँसाये।
पिय पिय रट पिय तेरा प्रियतम, बिन उसके ना चैना आये।

नीर बहें कर उसे समर्पित, और न इनकी कोई कीमत।
जीवन का वह ही बसन्त है, जान सको जानो यह फितरत।
जले ताप से दिल यह तेरा, दीखे ना कुछ तम हो गहरा।
याद उसे कर रखवाला वह, कृपा मिले तो होय सबेरा।

40

कहाँ छिपे सांवरिया तू मिल, दिन आता है फिर जाता है।
तुम बिन मेरा जी ना लगता, तारे गिन रैना कटती है।
सूनीं अंखियाँ खोजें तुमको, चाह प्रेम की अंखियाँ रोवें।
प्यासी धरती मेघ न आवें, बतला कैसे दिल समझावे।

अगम अगोचर पार न तेरा, जगत जाल ने मुझको घेरा।
निकल सकूँ ना अबल नाथ मैं, नैया पार करो मै टेरा।
थके पाई न कोई मंजिल, ढलता जाता हरपल यह दिन।
कृपा होय लहराये खेती, मिट जावें दुख के यह सब दिन।

जीवन की अब तू ही आशा, तोड़ो भ्रम मैं हुआ तमाशा।
तम को दूर करो प्रभु मेरे, दीप जला दो करो प्रकाशा।
नीर बहें बह जाऊँ इसमें, छोड़ न जाना रहना दिल में।
जीवन सर्जक किसे कहें हम, नहीं भूलना प्यारी रस्में।

41

खेल यहाँ दो दिन का सारा, खो जायेगा फिर बन्जारा।
मन बैचेन हो रहा पागल, बहा रहा आँसू की धारा।
इस क्षण जी ले पी सुगन्ध को, चार दिशा करती है स्वागत।
गम करना क्या खो जाना सब, आती संध्या मत हो आहत।

सुख दुख धूप छाँव का खेला, विछुड़ा जाता सारा मेला।
किसको पकड़े हाथ न आवें, जान यहाँ तू फिरे अकेला।
पोंछ यहाँ हँसकर तू आंसू, दर्द छिपा बढ़ता जा हरपल।
कब खो जाये इस मेले में, सत्य जान जीवन का तू चल।

हरि से प्रीति बढ़ा तू पगले, आदि सत्य वह अन्त सत्य है।
वर्तमान में सत्य वही है, जान यहाँ तू नहीं, वही हैं।
कर ले निज को यहाँ समर्पित, जैसा राखे जी ले हरपल।
मर्जी उसकी चले यहाँ पर, देख यहाँ कुछ पल की झिल मिल।

42

जी नहीं लगता जले दिल, रो रहे ले कर गमे दिल।
खोजती आंखे किसे है, ले गया निर्मोही यह दिल।
नयन में सुपने संजोये, लौट कर वह फिर न आये।
बेरहम इस जिन्दगी ने, सितम कितने ही ढहाये।

सबकी अपनी है दुनिया, बनता पागल यह मनुआ।
जा रही गंगाा यह बहती, ना पकड़ तू कूल मनुआ।
छोड़ सब तू बह लहर बन, खेल विधि तुमको खिलाये।
कितनी कर ले प्रतीक्षा, लौट कर ना पास आये।

कोई अपना ना पराया, खेले हरि उसकी माया।
नाचें कठपुतली बनकर, जप उसे सब ओर छाया।
बह रहे सब निज तरंग में, बह ले हरी की तरंग में।
साथ मिलता कुछ पलों का, छूटता जाता सफर में।

43

दिन आता है ढल जाता है, कुछ पता न तेरा पाता है।
आँखे यह ढूंढ़ रही तुमको, जिय मेरा भर भर आता है।
अंधियारी रातें डर लागे, कैसे इस मन को समझावे?
तू ही सर्जक पालन हारा, तुझ कृपा हमें प्रभु मिल जावे।

प्रभु लख लो मेरे नयनों को, ना शब्द मिलें कुछ कहने को।
निर्बल हम तुम जग के स्वामी, तुम पार लगा दो नैया को।
सुमरण करते हम मिटे यहाँ, मैं भूलाँ बस इतना कर दो।
झिलमिल करती इस दुनिया में, बन सकूँ पुजारी यह वर दो।

जग दन्श पियूँ सारे हँसकर, न भूलूँ कभी तू है मेरा।
मेरी श्वासों में बसे रहो, ना ध्यान हटे तुझ से मेरा।
मन माने ना रोवे हरदम, ना चैन मिले जलता हरपल।
अब तू ही मेरी आशा है, प्यासे है कण्ठ पिला दे जल।

44

आँसू से भीगी आँखें है, गावे मनुआ यही तराने।
उठती गिरती लहरें हरदम, जीवन क्या कोई ना जाने।
चैन मिले हरि के गुण गावे, अन्धकार में आस जगावे।
बेदर्दी इस जग के अन्दर, मन कह तू हम किसे मनावे।

मेरे साजन मुझसे रूठे, चल चल हारे भ्रम न टूटे।
ना मुझे मनाना प्रभु आवे, मैं पांव पडू. यह दिल टूटे।
तेरे बालक हम करो कृपा, दीखे ना कुछ गहरा है तम।
तू दीप जला अंधियारे में, पथ मिल जाये मिट जाये गम।

हरि हरि कहते बीते जीवन, यह रात कटे आ जाये दिन।
तेरा ही मुझे सहारा है, तेरे बिन मिटे नहीं क्रन्दन।
स्वीकार करो बहते नयना, कर खाली पर तुझे कहें हम।
दुनिया के तुम ही मालिक हो, ले चल मुझको जहाँ न हो गम।

45

मन शान्त नहीं हो पाया, कितने हम यहाँ जले हैं।
कितने बहते यह आँसू, ना अब तक फूल खिले हैं।
क्या है कसूर बतला दो, हम भटक रहे हैं मग में।
करूणा सागर कहलाते, सूखी करूणा क्यों तुझमें।

अनजान यहाँ सब रस्ते, पग पग पर ठोकर खाते।
अँखियों से नीर निकलते, पर तुझे नहीं हम पाते।
कैसे समझाये दिल को, मेरे सर्जक हो तुम ही।
बालक हम हैं, प्रभु तेरे, पालन करते हो तुम ही।

पृथ्वी जल वायू तेरे, सब तेज तुझी से मिलता।
आकाश तत्व है घेरे, जीवन इसमें ही पलता।
प्रभु फूल खिले कांटे भी, पग पग पर रोके रस्ता।
एक फूल वह दे दे प्रभु, चरणों पर रख मिट जाता।

सब चाह मिटी बस तू ही, मेरे इस दिल में बसता।
झिलमिल करती दुनिया में, सब भूल चाह मैं रमता।
मैं अबल नाथ तुम स्वामी, बिन कृपा मिले ना रस्ता।
तुझ प्यार मिले खिल जाये, मुरझाया जीवन हँसता।

46

मन गा ले क्या गाना चाहे, निज पीड़ा को किसे सुनाये।
स्वप्निल सी सारी दुनिया है, सुख दुख जिय को है भरमाये।
नीर पोंछ कुछ मुस्काहट ला, छोड़ शिकायत नित बढ़ता जा।
किससे पागल करे शिकायत, खेलों हरि कठपुतली बन जा।

कौन पराया हरि की लीला, जैसी उसकी मर्जी खेला।
दिल में धीरज धर ले पागल, उठता गिरता सारा खेला।
सारी दुनिया भागी जाये, कर न पकड़ तू चलता जाये।
देख विविधिता तू इस जग की, पल पल कैसे रंग खिलाये।

आशाओं के महल संजोते, जीवन नदिया भागी जाती।
उठती लहर गिरे तब रोती, कुछ ना बस में समझ न होती।
जीवन एक पहेली पगले, यादे जिसकी उसके सुपने।
जग प्रपंच में यहाँ नही सुख, जानो तो हरि ही हैं अपने।

47

तू साथ मेरे ज्ञान दे, प्रभु तेरी कठपुतली हम।
सुरति मेरी हो तुझी में, नहीं सताये जग के गम।
तुम जगत के हो रचियता, भूलूँ उलझन में पड़ता।
ज्ञान का दीपक जला दो, बसो दिल में पांव पड़ता।

तुम बिन सब लागे नीरस, बहता जाता यह जीवन।
प्रीतम हमें न भटकाओ, कृपा होवे खिले उपवन।
नयनों में बस जाओ तुम, आस जीवन की तुही है।
ताप से मैं हूँ झुलसता, तू बचा जग का मही है।

चल रहे ना जानते है, जाये कहाँ मन्जिल कहाँ?
नयन यह आँसू गिराये, मेरे प्राण पूछें पी कहाँ?
इस अंधेरी रात में प्रभु, तू छिपा बैठा कहीं पर।
महके यह सूखी बगिया, प्यार मिल जाये यहाँ पर।

48

संसार छूटा ना मिला, अब बता जायें कहाँ?
नयन से आँसू निकलते, तू छिपा बैठा कहाँ?
अबल है प्रभु समझ लेना, हम भटकते फिर रहे।
कृपा तेरी चाहते है, तू सदा दिल में रहे।

तेरी डगर पर हम चले, नीर कितने ही बहें।
याद से वंचित न करना, जिन्दगी बस यह चहे।
जियरा भर भर के आता, यादों को ले मिटता।
मेरा बेदर्दी मन यह, उलझनों में उलझता।

जग वैभव लागे नीरस, तुझे ना भूलूँ मिटूँ।
तू शमा बन प्यार दे हँस, बन पतंगा नहीं हटूँ।

49

तुझे मनाऊँ कैसे प्रियतम, रूके नहीं नयनों की झर झर।
कहाँ छिपे तुम मेरे स्वामी, कितने गाये गीत यहाँ पर।
प्यासे प्राण पुकारें माली, तुम बिन मेरी दुनिया सूनी।
मुरझाये उपवन को देखो, करो कृपा बरसाओ पानी।

तेरे इंगित पर सब चलता, छोड़ भरोसा मैं क्यों रोता?
अज्ञानी पर कृपा करो प्रभु, बल दो तुझ मर्जी से जीता।
थक थक रोता तुझे पुकारूँ, विखरा कैसे कहो संवारू।
इस जीवन को देने बाले, खड़ा डगर पर राह निहारूँ।

आँसू की बहती गंगा है, दिल में बसा नहीं दूजा है।
गाते गीत सफर कट जाये, जीवन में तुमको पूजा है।
करूँ अर्चना बिना पुष्प के, कैसे रीझो ज्ञान नहीं है।
थका हार कर पड़ा द्वार पर, कृपा करो उल्लास तुही है।

50

हे हरि मैं तेरे गुण गाऊँ, प्यार मिले तो ही तर पाऊँ।
चल चलकर थककर मैं हारा, साहस दो चरणा रज पाऊँ।

जीवन के तुम ही बसन्त हो, तुम बिन रोवें हरपल अंखियां।
मेरे प्राण पुकारे तुमको, देर करो ना धड़के छतियाँ।

तुम अनन्त के स्वामी हो प्रभु, भटक रहे अंधियारी रातें।
कैसे इस दिल को समझाऊँ, कर न सकूँ मैं प्यारी बातें।

इन नयनों में तुम बस जाओ, देखूँ जिधर वहीं तुम पाओ।
जग के सब प्रपंच है झूठे, विनय करूँ तुम ना भरमाओ।

गिरे नयन से आंसू धारा, देख हमें लो नाथ पुकारा।
टूटे सुपने तुम क्यों रूठे, जीवन के तुम ही आधारा।

51

मन रोये तुझे सुनाये क्या, ठोकर खा गिरते देखो ना।
झर झर अंखियों से नीर बहे, प्रभु पीड़ उबलती रूठो ना।
मेरे सर्जक हम भटक रहे, आँखे मूँदे तुम सोये क्यों?
जख्मी दिल तुमको बुला रहा, तुम बने हुए निर्मोही क्यों?

तुम अगम अगोचर पालक हो, टूटी नैया पथ ज्ञात नहीं।
आँखों में प्रेम छलक जाये, कटता सफर डर कोई नहीं।
तेरे चरणों की धूल हम, रोना जाने कुछ ज्ञान नहीं।
मेरे नयनों में बस जाओ, जग दन्श मिटे बस चाह यही।

आओ मोहन कुछ नाचे हम, अँखिया भीगी कुछ कम हो गम।
तेरी पावन माला को जप, डर छोड़ बहें तेरे संग हम।
पी प्राण पुकारें, यह हरदम, प्रभु नाथ अबल हम ना है दम।
द्वार तुम्हारे पड़े हुए हैं, ले चलो वहाँ ना होवे गम।

52

कितना दुख है कितनी पीड़ा, ऐसे में कैसे हो क्रीड़ा?
एक सहारा प्रभु तुम्हारा, याद करे रोवे यह जिवड़ा।
इस जीवन को देने वाले, प्राण पुकारें ओ मतवाले।
तेरे बिन यह उपवन सूखा, बरसो यह नैना हैं गीले।

चलूँ मगर मैं ठोकर खाऊँ, कैसे इस दिल को समझाऊँ।
अगम अगोचर पार न तेरा, टूटी नैया कैसे खेऊँ।
करो कृपा मिल जाये रस्ता, अनजानी गलियों में भटका।
प्रीति बढ़ा नयनों में बस जा, नहीं रहे फिर कोई खटका।

तुमको सुमरूँ नाचूँ हरदम, नयन गिराये वारिस रिमझिम।
इस पल दो पल के जीवन में, तुम्हे खोजता पर न है दम।
मोहन मेरे बजा बाँसुरी, जागे वीणा कब से सोई।
जनम जनम का दास तुम्हारा, देख हमें ले अंखियां रोई।

53

पीड़ा दिल की कही न जाये, तुझे पुकारूँ तू न आये।
मुझे छोड़ कर कहाँ छिप गये, कैसे इस मन को समझाये।
मेरे सर्जक मुझे न भूलो, दास तुम्हारे पथ को दे दो।
चलते रहें डगर पर तेरी, गाऊँ गीत तुम्हारे वर दो।

इस जीवन के तुम ही मालिक, तुम बिन रैन डराये काली।
सूखा जाता मेरा उपवन, देख हमें ले अब तो माली।
तुम बिन अँखियाँ नीर बहायें, तड़फे जियरा कैसे पायें?
चल चल हार गये हम स्वामी, करूणा का सागर कहलाये।

आशा के दीपक ना रूठो, झरते इन नयनों को देखो।
प्राण पुकारें, हरदम तुमको, तुम ही बस सुपनों में दीखो।
करें अर्चना खड़े राह पर, पार लगा दो मेरी नौका।
कुछ पल की यह सांसे बाकी, मिले ना मिले फिर यह मौका।

54

छन छन छन छन बाजे घुंघरू, डम डम डम डम बाजे डमरू।
चाहूँ प्यार हुआ दीवाना, मैं सदा तुझी को हूँ सुमरूँ।
नाम अनेकों रूप अनेकों, तुमको जो भी नैन वसाये।
जग के विष अमृत हो जायें, तुम्हें जपें न पीड़ सताये।

दुख की मिटती नहीं कहानी, नयना यह वर्षाये पानी।
कृपा होय सुखधारा बहती, दुख भी हो जाता है फानी।
देवों के तुम देव नाथ हो, तुझे मनावें छिपे कहाँ हो?
इस जीवन को देने बाले, मात पिता गुरू सखा तुम्ही हो।

चलते नाम तुम्हारा लेकर, गिरें थामना हाथ बढ़ाकर।
नाथ अबल हम अज्ञानी हैं, आँसू मेरे गिरते झर झर।
तेरा डमरू राह दिखाये, मग की बाधा दूर हटाये।
चरण पड़े हम नाथ संभालो, विनय करूँ जिय न भरमाये।

55

सुख का दाता नाम उसी का, मन भज तेरी अंखियाँ रोती।
हरि बिन पार लगे ना नौका, दुस्तर मारग तपती धरती।
संकट कटे पास नहीं आवें, नाम हरी जो गले लगावे।
एक सहारा पागल यह मन, काहे अपना जिया जलावे।

हरि हरि जप ले सपना है सब, अन्तस देख छिपा बैठा रब।
करो रमण मन हरपल उसमें, छूटे जाते कूल यहाँ सब।
चलता जा हरि के गुण गाले, आग लगी जो उसे बुझाले।
जीवनदाता सबका मालिक, मैं को छोड़ उसी संग बह ले।

सेवक बन कठपुतली उसकी, आना जाना मर्जी उसकी।
जान यहां क्या अपना पगले, देख यहाँ सब छवि है उसकी।
कदम कदम पर ठोकर खाते, हरि को भूल यहाँ अकुलाते।
मन में रख विश्वास वही है, दुख जग के फिर सब बह जाते।

56

मन उदास वह तुझे बुलावे, अंखिया मेरी भर भर आवें।
विरह तुम्हारा हुआ बाबला, सूखे धरती तू बरसावे।
एक सहारा तेरा लेकर, चलते नौका डगमग डोले।
पार लगा दो खेवट बनकर, सांसों की यह सरगम बोले।

बजी बांसुरी नाची मीरा, आओ मोहन रोवे जियरा।
तुम ही मोहन मेरे स्वामी, जग में भ्रम ने मुझको घेरा।
कृपा होय तो महके बगिया, देखो देखें प्यासी अंखियां।
मेरे सुपनों की मूरति तुम, चरण पडू. ना रूठो छलिया।

हरि हरि जपें नयन में आओ, मेरे सुपनों से ना जाओ।
जग की प्रीति यहाँ सब झूठी, बसो हृदय फिर कभी न जाओ।
करें अर्चना आंसू बहते, कण कण में हरि तुम ही बसते।
आँख मिचौनी छोड़ो अब तो, पड़े द्वार पर राहें तकते।

57

हरि हरि जप ले जग में जी ले, पावन नाम उसी का पगले।
उठती गिरती लहरें हरपल, वश तेरे क्या आँख खोल ले।
नाम हरी का कटे सफर यह, जग के जाल नहीं उलझाये।
आनी जानी इस दुनिया में, किसको पकड़े हाथ न आये।

बहे नीर तो इनको लख ले, किसको अपनी पीड़ दिखाये।
इस विष को खुद पीना होगा, जपे हरी अमृत हो जाये।
बाहर भीतर नाच रहा रब, हरि हरि जपले ध्यान धरो मन।
मैं को छोड़ नहीं इसमें कुछ, बहता जा हरि के संग तू मन।

जब जब काली रात डरावें, हरि प्रकाश तम दूर भगावे।
जिसने पीया जाम हरी का, बहें नीर पर मन सुख पावें।
हरि हरि जपना कुछ ना कहना, मर्जी जैसी उसकी रहना।
शूल लगेंगे तब ना मन में, हरि में जीना हरि में मरना।

58

खेल यहाँ सब कुछ पल के हैं, मान कहूँ मन तेरे हित की।
आना जाना इस दुनिया में, पकड़े किसको खबर न कल की।
हरि जप ले ना नज़र चुराना, चुप हो अन्तस प्रीति बढ़ाना।
आँख मिचौनी यह सुख दुख की, उसके हरपल जाम चढ़ाना।

आती जाती इन लहरों में, नाचे रोवे मन तेरा क्या?
दृश्य देख जो अभी रहा है, पलटे रंग तेरे बस में क्या?
बहता जा बस ना चलता है, विधि के जान खिलौने हम है।
उसका है सब कुछ तेरा ना, सबकी गठरी वह थामे है।

हरि का सुमरण कर चलता जा, कर्म सदा शुभ हों विनती कर।
अन्तस में वह ज्योति जगाता, बिन उसके यह जीवन दूभर।
हरि को जपो सदा हरि जप लो, जग की पीड़ भगाता वह है।
उसके हाथों में है डोरी, कर विश्वास न मिले दगा है।

59

देखो वह कौन इशारा है, बैठा वह कहाँ क्षितिज में है।
जब स्वप्न जगत के मिट जाते, अन्तस को फिर रंग देता है।
आशा की बोझिल गठरी ले, हम भटक रहे जग के अन्दर।
ठोकर खाते पग पग पर हैं, फिर नीर गिराते हैं झर झर।

मन ध्यान लगा हरि भूल नहीं, तेरा वह भाग्य विधाता है।
गिर चरणों में ही उसके मन, सब खेला यहाँ उसी का है।
जग दन्श मिटें हरि नाम जपो, हरि हरि कहते पथ पार करो।
सुपना सा यह बीता जाता, चिन्ता तज हरि से प्यार करो।

क्षण भंगुर भोग यहाँ जग के, कांटे में आटा लगा हुआ।
मन वैरागी हो पकड़ छोड़, वह धन्य हरी का यहाँ हुआ।
अनहद बाजे बन्शी को सुन, अन्तस में छिपा हुआ वह गुन।
तृष्णा को त्याग उसे भज ले, दुख मिटते मनुआ होय मगन।

60

साँस साँस में जप मन पागल, टूटेंगे पीड़ा के बन्धन।
प्यार बहेगा इन नयनों से, नहीं करेगा दिल यह क्रन्दन।
जग में चैन मिले न उस बिन, गाती सृष्टि सदा उसकी धुन।
जीवन उसका मर्जी उसकी, नाचो कठपुतली उसकी बन।

नैया तेरी हरि ही खेवे, अर्पित कर उसको यह साँसे।
नयन बसा हरि की मूरति को, प्यार बढ़ा हरि ही दुख नासे।
ध्यान धरो मन हरपल उसका, तम में एक सहारा उसका।
ज्ञान ज्योति को वही जलावे, उसके बिन हिलता ना तिनका।

जप मन उसको चैन मिलेगा, हरि के बिन ना फूल खिलेगा।
जप हरि को फिर तोल स्वयं को, अंधियारा सब दूर भगेगा।

61

मन उड़ उड़ तू कहाँ जा रहा, हरि सुमरे बिन चैन न पावे। ठोकर खावें नीर बहावे, याद करो पिव जिय हर्षावे। क्षण भंगुर भोगों में रमता, अमृत छोड़ गरल क्यों पीता। किसे सुनाये अपनी पीड़ा, देखो हरि हिय तेरे बसता।

जगत भूल कर निज में डूबो, ध्यान लगा हरि हिय में देखो।
आनी जानी इस दुनिया में, नाच रहा वह उसको देखो।
जपते जपते नयना बरसे, लागे रिमझिम सावन बरसे।
तृप्त धरा हो प्यास मिटे तब, कोयल कूके जियरा हरषे।

बगिया सूखी वह खिल जाये, हरि को सुमर बह रही गंगा।
मिट जाते सारे दुख पागल, जो नहाये मन हो चंगा।
प्रीति लगाता फिरे जगत में, सभी छोड़ते तुझे अधर में।
देखे क्यों ना हुआ बाबला, हरि का दास बना जी जग में।

62

हरि तुम बिन मन चैन न पावे, दर दर भटकूँ तू ना आवे।
विरह सतावे जियरा तड़फे, बरसे नयना प्रीति बढ़ावे।
गीत तुम्हारे गाऊँ हरपल, मिटूँ इसी में देना तू बल।
बनूँ पतंगा नहीं लजाऊँ, तुझसे नज़रे हटे न इक पल।

हरि हरि कहते सफर कटे यह, नहीं शिकायत हो इस जग से।
इस जग का तू ही तो मालिक, तू ही समझे कहना किससे।
जीवन के तुम ही हो स्वामी, अज्ञानी हूँ बालक तेरा।
पथ दर्शा दो चैना आवे, दूर हटे तम होय सबेरा।
झरते इन नयनों को देखो, चरण पडू. मुझको अपना लो।
फूल बाग के तेरे माली, प्यार चाहते हमको लख लो।
पार लगा दो खेवट बन कर, नैया डोले छिपो न मोहन।
मुरली अपनी हमें सुना दो, मिट जाये दुख के सब बन्धन।

63

हरि ओम जपो हरि ओम जपो, दुख मिट जाते जिय को सुख
दो। प्यासे जो प्राण बिलखते हैं, उनको अमृत की बूंदे दो।
पग पग पर कांटे विछे हुए, अनजानी गलियां भटक रहे।
जीवन में सुख मिलता जब ही, जो हरि गंगा में सदा बहे।
स्वप्निल सी यह सारी दुनिया, पल पल में रंग बदलती है।
किसको पकड़े सब भाग रहे, आँखो में आता पानी है।
जीवन हरि का उसमें जी ले, वह आदि सत्य है अन्त सत्य।
कुछ पल हम जग में खेल रहे, कठपुतली उसकी वही सत्य।
सुख दुख आते सब बह जाते, मन धूप छांव का खेल यहाँ।
हरि को रट ले वह ही खेवट, मन चैन मिले हरि जपो यहाँ।
हरि मगन हुआ मन नाचे तन, सब मिट जाता जिय का क्रन्दन।
मर्जी उसकी खेले वह ही, मैं छोड़ वही है सुखनन्दन।

64

बालक तुम्हारे हम, अपनी किरपा रखना।
यह श्वास जपे तुमको, मुझसे न खफा होना।
जानू ना अज्ञानी, तुम सा ना है दानी।
नयन यह पुकारे रो, लख लो मेहरबानी।
जीवन के सर्जक तुम, अनजानी यह गलियाँ।
न और कोई आशा, तुम थामों यह बहियां।
चल चल कर गिरते हम, तू बता कहाँ खोजे?
ब्रह्माण्ड तुम्हारा है, सब ही तुमको पूजें।

नयन में बहें आंसू, पथ देखे यह जीया।
चरण रज मिल जाये,यह पार लगे नैया।
जिय तड़फ तड़फ जाये, चाहूँ हिय बस जाये।
इस जग मं कित जायें, चाहूँ हिय बस जाये।
सूखी बगिया मेरी, ना रूठ मेरे प्यारे।
बस एक सहारा तू, ना मुझमें बल हारे।
सांसे गाती रहती, निशादिन तेरी सरगम।
बस जाओ नयनो में, सब भूलूँ जग के गम।

65

सावन बरसे रिमझिम रिमझिम, याद लिये मैं तड़फूं तुम बिन।
धुन तेरी सुन मीरा नाची, बजा बांसुरी नाचे तन मन।
चातक जैसे नभ को देखूँ, तड़फू जल बिन मछली जैसे।
तुम बिन जीना क्या जीना है, बल ना मुझमें पाऊँ कैसे।
अबल नाथ हम शक्तिमान तुम, प्रीति बढ़ाओ पायें तुमको।
जग मेले में ना भटकाओ, बसो नयन में वर दो हमको।
मेरे देवता तुम ना रूठो, तेरा जीवन तू मालिक है।
नयनों से आंसू झरते हैं, जपें नाम तेरा हरपल हैं।
नमन करो स्वीकार हमारा, सर्जक मेरा तुही सहारा।
गायें तेरे गीत सदा ही, बहें नयन से आंसू धारा।
तुम ही थामना गिरे कहीं पर, इस जीवन के तुम ही धागे।
विरह तुम्हारा प्यारा लागे, सब कुछ फीका तुम बिन लागे।

66

हरि हरि कहो कटेंगे सब पल, मेला सारा दो दिन का है।
धूप छांव का खेल यहाँ पर, जाना सभी को अकेला है।
जीवन में कर प्यार सभी से, कुदरत के यहाँ खिलौने सब।
कर न शिकायत यहाँ निभा दे, निज लिये वासना घूमें सब।
किसको अपनी व्यथा सुनाये, बढ़े प्रीति हरि मन सुख पाये।
सकल भोग जग फीके लागे, मगन होय हरि के गुण गायें।
अपना क्या है और पराया, खेले हरि सब उसकी माया।
जग की चुभन सभी मिट जाती, हरि से जिसने नेह बढ़ाया।

सोते उठते याद करो हरि, नहीं यहाँ तुम नाचे यह हरि।
हरि तुझमें यह देख रहा सब, ध्यान लगाकर देखो वह हरि।
झर झर नयना नीर बहाये, धन्य मगन हो जो हरि गावे।
कठपुतली बन हरि की नाचे, सुरति उसी में सदा लगावे।

67

हरि ओम कहो हरि ओम कहो, दुख भंजक उसका नाम कहो।
जीवन सर्जक पालक वह ही, वह सदा साथ है वही कहो।
पग कांटों से जब हो छलनी, अंधियारा तुझे डराये जब।
तब नाम हरी का ले लेना, दुख बादल फट जायेंगे तब।

वह पार लगाये खेवट बन, कर उसकी पूजा सेवक बन।
सब ताप मिटे हरषे जियरा, मैं छोड़ हरी कठपुतली बन।
सब ओर इशारा है उसका, मन जान यहाँ है क्या अपना।
मर्जी से उसकी है आना, जायेंगे कहाँ चले सुपना।

हरि भज हरि भज यह कटे सफर, मेला दो दिन का है सारा।
क्यों हुआ बाबला फिरता है, जानो जीवन का आधारा।
अन्तस में उसका दीप जला, मिट जायेगा सारा क्रन्दन।
चरणों में शीश झुका तू मन, मिट जाते दुख वह सुखनन्दन।

68

हरि पीड़ हम किसको कहें, इन नयन से आंसू बहें।
सांझ होती जा रही है, तू ही बता कैसे गहे।
थके हारे हम पुकारें, नाथ तुम मेरे सहारे।
ना हमें मझधार छोड़ो, नयनों में आओ प्यारे।

स्वप्न सा सब जा रहा है, तू नहीं क्यों आ रहा है।
सुखद होवे स्वप्न मेरा, याद में जिय जी रहा है।
प्रीति बस इतनी बढ़ा दे, जो जगह दे दे वही घर।
पतंगा बन मिट सकूँ मैं, चमन तेरा हम मुसाफिर।

आ मिलो तुमको पुकारे, कंठ से हरि हरि उचारें।
तेरे बिन रोये अंखियाँ, दूर हो तम राह सुधरे।
याद में तेरी मिटूँ मैं, सब जगत के गम भूलकर।
अश्रु की गंगा में बहकर, पहुँचू तेरे मार्ग पर।

69

नीर बहें हरि मुझको लखलो, जनम जनम का दास तुम्हारा।
इस जीवन को देने वाले, सकल सृष्टि का तू आधारा।
ऋषि मुनि हारे तुझे खोजते, कैसे पाऊँ प्राण पुकारें।
अज्ञानी हूँ ज्ञान नहीं है, कृपा होय तो तू ही तारे।

द्वार खड़ा मैं बना भिखारी, बिन तेरे यह सूखे क्यारी।
तपे धरा तब तू ही बरसे, अंखियां रोवें सुनो मुरारी।
जल बिन मछली जैसे तड़फे, ऐसे तड़फे मेरा जियरा।
नहीं छिपों तुम मोहन मुझसे, करो दूर तम होय सवेरा।

नाचे एक इशारे पर सब, अन्तर्यामी तुमसे कहना।
मुझसे रूठ नहीं जाना तुम, बाट देखते मेरे नयना।
चरणों में यह शीश झुका है, हाथ जोड़ता द्वार तुम्हारे।
जगत चक्र में ना उलझाना, मिले भक्ति वर हम तो हारे।

70

ज्ञानी मुनि जन करें अर्चना, तेरी हरपल ज्योति जलायें।
विनय करूँ दिल में बस जाओ, मेरे नयना नीर बहाये।
अज्ञानी हूँ बल ना मुझमें, कृपा होय तो ही हम पाये।
मेरे भाग्य विधाता सर्जक, खड़ा हुआ मैं शीश झुकाये।

अगम अगोचर पार न तेरा, जीवन जोगी बाला फेरा।
आज यहाँ कल कहाँ सांझ हो, संग तेरा हो सदा सुबेरा।
पागल मन क्या सोंचे जग में, बदले रंग यहाँ पल पल में।
हरि का दामन पकड़ यहाँ पर, उसी रंग से देखो जग में।

हरि गंगा में बहता जा मन, मैं को छोड़ उसी की झिलमिल
हरि जब रोम रोम बस जाये, दूर हटे काया के सब मल।
हरि का सुमिरण ही सुखदाई, पीड़ा मिटती हो शरणाई।
श्वास श्वास मन उसे पुकारों, आदि अन्त वह सत्य कहाई।

71

हरि ओम जपो हरि ओम जपो, मन के भय सारे दूर करो।
हरि बिन जिय की जलन मिटे ना, समझो मन हरि को याद करो।
बहती जाये जीवन नदिया, कितने मिल कर फिर छूटे सब।
कितने दन्श लगे इस मग में, तपस मिटी ना सुख का घर रब।

अंखियाँ रोवें हरि को ढूढ़े, हे हरि तुम मुझ पर कृपा करो।
छिपे कहाँ तुम नभ से पूछूँ, नैया को मेरी पार करो।
एक सहारा तेरा ही है, नज़र नहीं हमको आता है।
घट घट बसता अन्तर्यामी, जिय मेरा यह घबराता है।

कितना ही बरसे यह सावन, लागे तुम बिन सूना जीवन।
मीरा नाची जैसे छम छम, बन्शी बाजे फिर नाचे मन।
ज्योति जला मन हरि की पगले, बगिया सूखी जाती उस बिन।
लहरायेगी दिल की बगिया, बाजे अनहद उसको तू सुन।

72

शरण तुम्हारी लाज राखो, बहें नीर मेरे नयनों में।
सब कुछ देते मालिक मेरे, भटकें हम मन के जंगल में।
करें अर्चना तेरी प्रभु जी, बसे रहो मेरे नयनों में।
नीर नयन तेरा पथ खोजें, जीवें हरपल नाथ तुझी में।

गाते गाते गीत तुम्हारे, कर दूँ जीवन तुमको अर्पण।
मेरा क्या है सब कुछ तेरा, कृपा होय तो देखूँ दर्पण।
मात पिता गुरू सखा तुम्ही हो, जीवन दाता अन्तर्यामी।
दास तुम्हारा हूँ अज्ञानी, पालक तुम ही मेरे स्वामी।

प्रीति बढ़े हरि हरपल तुझमें, जाऊँ भटक न मैं तृष्णा में।
खेवट नौका पार लगा दो, डोल रहा मैं इस आंधी में।
अबल नाथ हम सबल तुही है, तेरी चाहे हरपल छाया।
इस मेले में भटक न जावें, विछुड़े तुम यह रोवे काया।

73

ले चल पार लगा दे नैया, मूँद न आखें मेरे खिवैया।
एक बची बस तू ही आशा, पांव पड़ू. मैं तेरे सैंया।
किसे सुनाये अपनी पीड़ा, देख रहे क्या करते क्रीड़ा।
जाम पिये कितने ही विष के, चैन मिला ना जीवन थोड़ा।

तेरे गीतों को गा गा कर, सफर कटे यह मारग दुस्तर।
नयनों से बरसात हो रही, कहाँ छिपे प्यारे बंशीधर।
मुरझाया तुम बिन यह जीवन, तुमको खोजें अंखियां प्रियतम।
बजा बांसुरी मन हर्षाये, मिट जायें सारे दिल के गम।

ठोकर खाता चल कर गिरता, बन अनजाना मुझे बचाता।
जानूँ ना मैं तेरी माया, अज्ञानी हूँ भाग्य विधाता।
देख रहा मैं तेरे सुपने, ज्ञानी ना मैं बल ना मुझमें।
नमन करो स्वीकार हमारा, बस जाओ तुम मेरे दिल में।

74

हरि ओम कहो हरि ओम कहो, मन शरणा उसकी सदा रहो।
दुख भंजक वह सुख का दाता, उसके द्वारे मन खड़े रहो।
कर कृपा वही बरसेगा मन, तपती धरती बरसे बन घन।
तू कभी उसे बिसरा नहीं मन, वह ही है इस जीवन का धन।

अन्धी गलियां देता प्रकाश, हरि ओम जपो कहना ना कुछ।
अन्तर्यामी जग का स्वामी, सब जाने कहना है क्या कुछ।
जो नीर बहें इन नयनों से, अर्पण कर पास न राखे कुछ।
वह पार लगावेगा नैया, मर्जी उसकी वह ही सब कुछ।

मन उसको हरपल सदा जपो, शिशुवत रोवो तुम उसे चुनो।
बन जा कठपुतली मन उसकी, मर्जी उसकी है यही गुनो।
जपते जपते लय हो जाये, सब ओर नजर वह ही आये।
हरि की लीला नाचे वह ही, यह समझ कृपा हो तब आये।

75

जीवन बहता अपनी धुन में, कल क्या हो जाने हरि केवल।
ताने बाने बुन बुन थकते, ना जान सके इसका क्या फल।
ना चैन मिले जिय अकुलाये, हरि याद करो आंसू आयें।
वह ही सर्जक पालनकर्ता, विश्वास करो पिव तू पाये।

जख्मी दिल के सब दन्श मिटें, हरि ओम जपो तो चैन मिले।
हरि की गंगा में बहता जा, गिरते आंसू में कमल खिले।
मेहमा यहाँ पल भर के है, क्या अपना और पराया है।
आती जाती देखो सांसें, छोड़े कब हरि की माया है।

हरि को जप लो हरि को पी लो, हरि हरि कहते यह कटे सफर।
स्वप्निल सी है दुनिया सारी, कर अर्पण नीर गिरे झर झर।
मन मानों हरि में ही तू मिट, जपो जाये अंधियारा छट।
नीरस लागे जग के वैभव, हरि पाये जग सुख जाते पिट।

हरि में ही नैन लड़ा मन तू, क्यों उबल रहा है तू हरपल।
बिन उसके शान्ति मिलेगी ना, तृष्णा को जग ले रहा उबल।

76

विनती करूँ हरि सुख का दाता, दुखहर्ता तू जीवन दाता।
तुम बिन कृपा भटकता जिवड़ा, खड़ा द्वार पर भाग्य विधाता।
नीर गिराऊँ तुझे बुलाऊँ, थक हारा मैं कैसे पाऊँ?
मेरे जीवन की तुम आशा, चाहूँ हरपल प्रीति बढ़ाऊँ।

जग के वैभव नीरस लगते, विरह तुम्हारा प्यारा लागे।
अंखियां नीर गिरायें झर झर, चाह बहूँ इसमें मन लागे।
तेरे बिन यह नगरी सूनी, मोहन आकर दीप जलाओ।
इन सांसों में हरपल आओ, सुपनो से तुम कभी न जाओ।

प्यार बढ़े कट जाये रस्ता, विरह बढ़े तो नीर बरसता।
सबका तू ही है रखबाला, सूखे धरती तुही बरसता।
मेरी पूजा नयन बरसते, अज्ञानी को तुम्ही समझते।
पार लगा दो मेरी नौका, नाथ तुम्हारे पांव पड़ते।

77

हरि ओम जपो संताप मिटे, मन जप के देखो रोता क्यों?
दन्श लगें जब इस दुनिया के, न भूलो सहारा छोड़े क्यों?
नीर गिरे जब इन अंखियों से, अन्धकार से जब डर लागे।
नाम हरी का जप ले पागल, पथ मिलता सारा तम भागे।

हरि ओम जपो कटते बन्धन, बस एक वही है सुखनन्दन।
जग घूम रहा निज चाहत में, न कोई सुने तेरा क्रन्दन।
जप ले हरपल रस बरसेगा, नयनों में हरि ही चमकेगा।
आनी जानी इस दुनिया से, ना प्रीति लगा दुख भागेगा।

हरि हरि कहता जा कटे सफर, मैं छोड़ यहाँ पर बन्शीधर।
नाचे गावे रोवे वह ही, सर्जक पालक वह लीलाधर।
लीला उसकी हम कठपुतली, जैसा भी नचाये नाचे जा।
मन जपो सदा हरि को हरपल, यादों में नीर गिराये जा।

जो नीर गिरें वह सुख देते, यादें उसकी प्यारी लगती।
हरि की गंगा में बहता जो, सब सिद्धि यहाँ फीकी लगती।

78

नभ में बैठे देख रहे तुम, रोना चाहूँ ना रो पाऊँ।
उड़ आऊँ न सामर्थ मेरी, किसको अपनी पीड़ सुनाऊँ?
मेरे देवता तुम ना रूठो, बालक हम है तुम जग पालक।
आँखों से यह नीर निकलते, गया हार मैं रस्ता तक तक।

करूँ अर्चना तुझे रिझाऊँ, पास नहीं कुछ आंसू लाऊँ।
ऋषि मुनि ज्ञानी तुमको जाने, मैं अज्ञानी कैसे पाऊँ?
करो दया मिल जाये रस्ता, ना जानू कर्मो का बस्ता।
जग के सारे भय मिट जाते, जिसके दिल में तू है बसता।

हरि हरि कहते कट जाये पथ, मेरे नयनों में बस जाओ।
कुछ ना माँगू बस यह चाहूँ, इस दिल से तुम कभी न जाओ।
लहर बना हरि की गंगा में, बहता रहूँ जहाँ ले जाये।
निज की गाथा मैं भूलूँ, हरि को देखूँ हरि ही भाये।

79

तुम बिना जायें कहाँ हम, आँख रोती तू कहाँ है?
प्यार तेरा चाहते हैं, तुम बिना मुरझा गये हैं।
द्वार तेरे मैं पड़ा हूँ, तू हाथ अपना प्रभु बढ़ा।
पथ है दुर्गम डरता मैं, जाता नहीं मुझसे चढ़ा।

चले चलकर हम थके है, नीर आंखों से निकलते।
तुम न रूठो मेरे मोहन, प्राण पाने को मचलते।
जिन्दगी की शाम आई, यह उदासी साथ लाई।
न बनो हरजाई तुम तो, एक तू ही मेरा साई।

अज्ञानी नहीं जानता, दीदार तेरा कैसे हो?
मैं दया का बस भिखारी, चाहूँ तेरा आना हों।
शीश चरणों में धरा है, नयन में आँसू हमारे।
जाने न अनजान गलियाँ, कब मिलो हम तुम्हारे।

80

हरि जप मन को शान्ति मिलेगी, अंधियारे में राह मिलेगी।
सबका रखबाला वह ही है, बिन उसके ना तड़फ मिटेगी।
कितनी भटकन कितनी तड़फन, अब तो पागल हरि को चुन ले।
डगमग होती इन लहरों में, मन भज ले ना हरि को भूले।

याद उसे कर दुख मिट जाते, जीवनदाता सबका पालक।
उसे भूल क्यों दुख को पाते, तू भी तो उसका बालक।
प्यासी धरती जल बिन तड़फे, अम्बर देखे कब वह बरसे।
विरह बढ़ावे दिल की पीड़ा, जपते हरि को नयना बरसे।

झिलमिल करती स्वप्निल दुनिया, मन हरि को जप एक वही सुख।
जिसके दिल में हरी समाये, मिट जाते सारे जग के दुख।
प्रीति बढ़ा ले हरि से मन तू, कट जाते सब दुख के बन्धन।
नाम हरी का है बस सांचा, जप उसको मन वह सुखनन्दन।

81

ढूंढते तुमको फिरें हम, ज्ञानी कह रहे पास में।
सब जगह में तू समाया, क्यों नीर बहते नयन में।
इस अंधेरी रात में प्रभु, डगमगाते मेरे कदम।
कृपा तेरी मिले हमको, फिर मिट जाते सारे गम।

नाव मेरी का खिवैया, दीखे न कुछ पडू. पैंया।
घूमूँ स्वप्निल सी दुनिया, तम दूर करो दो छैंया।
खोज कर हारा थका मैं, ढूंढू मिल जाये साया।
कैसी किस्मत है मालिक, तप रहा न मिलती छाया।

तू गया जब से विछुड़ कर, मन नहीं लगता हमारा।
अब झगड़ मुझसे नहीं तू, जान ले मैं नाथ हारा।
तुम हुए निर्मोही क्यो प्रभु, इंतजा कर हाय थकता।
आँख से हैं नीर बहते, मेरे दिल में तू रहता।

प्यार की बंशी बजा दो, खिले जिया हरषे काया।
एक तेरा ही सहारा, सदा रहे तेरा साया।
तुम कहाँ पर जा छिपे हो, खोजती बैचेन अंखियाँ।
मैं पुकारूँ अब तो आओ, थामो बढ़कर यह बैयां।

82

मन भज ले तू हरी का नाम, जाते सभी बन बिगड़े काम।
कलुष दूर होते सब मन के, हरि का पी लिया जिसने जाम।
चल चल जग में ठोकर खाता, नाम उसी का शान्ति दिलाता।
पगले उसको भूल रहा क्यों, जपता जा यह मन सुख पाता।

हरि जप नाम बड़ा ही प्यारा, दूर कर भय सुख अधारा।
हरि की जो भी शरण गया है, खेता नैया खेवन हारा।
मन हरि जप सब क्षण भंगुर सुख, तड़फ रहा जैसे यह सब कुछ।
हरि की ज्योति जला ले मन तू, बिन इसके ना चैन मिले कुछ।

हरि हरि जपो देख लो जग को, आज यहाँ ना जाने कल हो।
आनी जानी इस दुनिया में, पकड़ न कर दिल के गम कम हो।
जीवन थोड़ा बीता जाता, गुरू सखा वह पिता है माता।
आया जग को देख इसे तू, सारे खेल वही है रचता।

हरि जप चलता जा इस जग में, मैं को छोड़ बहो इस हरि में।
प्रीति बढ़े यह बरसे नयना, जो सुख इसमें नही किसी में।
हरि हरि हरि हरि ओम् कहो मन, बगिया उसकी फूल यहाँ हम।
उसकी कृपा मिले खिल जाये, दे सुगन्ध औरों को भी हम।

83

हरि बिन जीवन जिया न जाये, अंखिया निशदिन नीर गिराये।
पांव पड़ू हरि तुझे पुकारूँ, जियरा मेरा भर भर आये।
खोजूँ कहाँ न दीखे कछ भी, मेरी प्रीति नहीं है झूठी।
अज्ञानी हूँ कुछ ना जानूँ, बालक तेरा क्यों है रूठी।

पाप पुण्य सुख दुख की भाषा, जानूँ ना मैं तेरी माया।
प्यार तुम्हारा हरपल चाहूँ, मुझे बचालो मैं भरमाया।
सकल सृष्टि के तुम हो मालिक, प्यार तुम्हारा हरपल चाहूँ।
बन्शी की धुन मुझे सुनादे, मीरा बन मिट जाना चाहूँ।

सूखी धरती जल को तरसे, बगिया महके अम्बर बरसे।
नयन निहारे तेरा रस्ता, प्रीति बढ़े यह नयना बरसे।
सुरति रहे हरि तुझमें मेरी, तेरे बिन हम हुए अभागे।
जानूँ ना कर्मों का बस्ता, कहाँ जाऊँ मन नही लागें।

विरह तुम्हारा बढ़ता जाये, और नहीं कुछ मोहि सुहाये।
जल बिन जैसे मछली तड़फे, तड़फूं पर यह प्राण न जाये।
शमा तुही परवाना मैं हूँ, झूठी प्रीति बने ना सजना।
बना दिवाना फिर मैं ना क्यों, चाहूँ चरणों में मिट जाना।

84

प्यार के दो जाम पीता, मगन हो यह सफर कटता।
बनता निर्माही तू क्यों, देख ले मैं तो सिलगता।
बैचेन दिल यह खोजता, न दीखता है अन्धेरा।
किस जगह जाऊँ बता दो, दिल नहीं लगता हमारा।

पायें तुमको कैसे हम, चल चल थके बैचेन दिल।
डगमगाते कदम मेरे, जायेगी संध्या भी ढल।
कैसे हम तुझे पुकारे, राह तेरी देखते है।
जिन्दगी की शाम आई, नीर मेरे बरसते है।

स्वप्नवत सुन्दर धरा पर, खेल कितने ही खिलाये।
एक सुपना है हमारा, नयन में बस तू ही छाये।

85

हरि बोलो हरि बोलो मनुआ, इस जीवन का वह आधारा।
प्रीति लगा ले हरि से मन तू, जीवन यह अनमोल तुम्हारा।
जीवन नदिया बहती जाये, दुख में नयना भर भर आये।
मन हरि को तुम कभी न भूलो, अन्धकार में ज्योति जलाये।

टूटे जाते सारे रिश्ते, साथी दुख में सारे बचते।
इन काली रातों में पगले, हरि बिन धैर्य कहाँ हम रखते।
पालक वह है जीवन दाता, जप हरपल वह खेवे नैया।
उसे भूल कर दुख को पाते, करो विश्वास जगत रचैया।

नयन बसा ले हरि को पागल, कट जाते तब सारे बन्धन।
उसकी बन्शी बाज रही है, सुनो उसे सब खोता क्रन्दन।
मन तो है यह उड़ती चिड़िया, कहीं न ठहरे भटके जियरा।
हरि रस में जो इसे डुबाये, अनहद बाजे नाचे जियरा।

86

हरि से जिसने प्रीति बढ़ाई, मिट जाते सब दुख के बन्धन।
बैठ द्वार पर हरि के पागल, वहाँ बज रही अनहद की धुन।
सर्जक वह है सबका पालक, दुखभंजक से जोड़ो नाता।
उसे भूल कर हम दुख पावें, चरण पकड़ वह भाग्य विधाता।

उसने यह ब्रह्माण्ड बनाया, सुख दुख का यह खेल रचाया।
मन तू क्यों बेचैन हो रहा, देख साथ है उसका साया।
मत डर तेरी झोली खाली, तैर रही आँखों में लाली।
नीर बहाती हरि को भूली, याद उसे कर आये माली।

और लगे सुख सारे झूठे,, प्रीति बढ़े हरि में मन नाचे।
इस तन का भी भान रहे ना, मन जब हरि चरणों में पहुँचे।
हरि यादों में दुख मिट जाते, निशदिन ध्यान करो हरि का मन।
जग के दन्श लगे कितने ही, सदा उसे सुमरो पागल मन।

जल बिन मछली कैसे जीये, हरि बिन चैना कभी न आये।
जितनी प्रीति बढ़ाये हरि से, नयना बरसे सावन छाये।
उसका पी ले जाम यहाँ पर, छोड़े पकड़े हाथ नहीं कुछ।
मिट जायेंगे सब तेरे दुख, बहता जा हरि का ही सब कुछ।

हरि को जपते करो सफर तय, खो जाते सारे जग के भय।
अन्धकार सब दूर भगेगा, बुला उसी को वह मृत्युञ्जय।

87

जीवन की यह शाम पुकारे, आओ राधा मोहन प्यारे।
तुम बिन अब तो रहा न जाता, तड़फे मेरे प्राण पुकारे।
जीवनदाता मैं अज्ञानी, सुख के दाता अन्तर्यामी।
पार लगा दो मेरी नैया, शरण तुम्हारी आया स्वामी।

नीर बहायें अंखियाँ हरदम, चलकर आऊँ ना मुझमे दम।
छाया है सब ओर अंधेरा, कृपा मिले तो मिट जाये गम।
हरि हरि जपूँ सुरति अब तेरी, बढ़ा विरह को मैं अब तेरी।
तुझ बिन कृपा चला ना जाये, जनम जनम की तेरी चेरी।

पास नहीं कुछ नयना बहते, ना कसूर मेरा यह कहते।
ठगनी माया मुझे रूलाये, अनजानी गलियों में बहते।
नाथ जगत में ना भटकाना, जख्मी हूँ अब दिल न दुखाना।
जपते जपते रैन कटे यह, बन्शी की धुन मुझे सुनाना।

88

हरि चरणों में प्रीति लगा मन, याद उसे कर मन तू झूमें।
वह सम्राट सभी का स्वामी, बना भिखारी क्यों जग घूमें।
झिलमिल करती इस दुनिया में, मन जा शरण उसे अपना ले।
याद उसे कर वह करूणा कर, जीवनदाता वही संभाले।

जीवन कैसा समझ न आये, चाहूँ मन हरि प्रीति बढ़ाये।
अज्ञानी हूँ कुछ ना जानूँ, बाट निहारूँ कब हरि आये।
कितने बीते जनम पता ना, आगे की हरि मै ना जानूँ।
द्वार तुम्हारे पड़ा दास मैं, शरण तेरी तुमको मानू।

अंधियारा जो हमें डराये, काली रातें जी घबराये।
मन हरि जप के देख जरा तू, व्याकुलता चित की मिट जाये।
हरि हरि जपो नाम हरि सांचा, बन जाते सब बिगड़े काजा।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान में वह ही राजा।

89

घट घट बसता देख रहा सब, मन हरि जप वह सबका स्वामी।
यह जीवन है बहता पानी, याद उसे कर अन्तर्यामी।
नयना हरपल नीर बहाये, जीवन कैसा समझ न आये।
हरि प्रीति में जो भी खो गया, संकट कटते पार लगाये।

मन हरि जप ना उसे भुलाओ, नाचो वैसे यहाँ नचाये।
कठपुतली उसकी हम तो हैं, मानो हिय तब ही सुख पाये।
मेरा तेरा क्या इस जग में, जाते प्राण यहाँ क्षण भर में।
सुमरे हरि को सदा यहाँ जो, दुख मिटते ना रोये नगमे।

हरि नहिं दीखे जियरा तड़फे, दूर दूर तक अंखियां भटके।
बन्शी धुन सुनने को आतुर, चलते रहें न पथ में अटके।
करो उजाला अंधियारे में, दास तुम्हारे रख चरणों में।
याद लिये पागल बन घूंमू, चाह प्यार की बसो नयन में।

90

थके यहाँ हम सुर ना बजते, देखो हमको नीर निकलते।
अनजानी गलियों में भटकें, पथ को देख प्रतीक्षा करते।
दास तुम्हारे कृपा करो हरि, इस जीवन को देने बाले।
अबल यहाँ हम पथ दर्शाना, जीवन छोटा ओ मतबाले।

अपरंपार तेरी माया है, कण कण में तू ही छाया है।
फिर भी होती अंखियां गीली, ऋषि मुनि हारे जग सुपना है।
हरि हरि कहते चलते जायें, बल दो तुमको नहीं भुलायें।
अबल नाथ मैं कहा न जाता, एक भरोसा पार लगाये।

मेरे माली अब तो आ जा, मुस्काया गुलशन यह राजा।
आँख मूंद कर तू अब ना सो, बरस यहाँ बगिया पर छा जा।
तपती धरती तू ही बरसे, प्राण तुम्हारे बिन हरि तरसे।
बस जाओ तुम इन नयनों में, जग की पीड़ मिटे दिल हरषे।

91

प्यार मिले महके यह बगिया, रास रचाओ प्यारे रसिया।
पथराई मेरी यह आंखे, कुछ ना भावे तुम बिन छलिया।
आओ बन्शी हमें सुनाओ, तन मन भीगे ताप मिटाओ।
जनम जनम से भटक रहा हूँ, अंखियाँ देखो नहीं रूलाओ।

विरह तुम्हारा प्यारा लागे, ना आओ तो इसे बढ़ाओ।
जलकर भस्म होऊँ मैं इसमें, विनय करूँ मैं प्रीति बढ़ाओ।
अबल यहाँ मैं चला न जाता, काली रैना जी घबराता।
मेरे प्राण पुकारे तुमको, सुन लो मेरे भाग्य विधाता।

अंखिया नीर गिरायें हरपल, छिपे छोड़ क्यों हमको मोहन।
तुम बिन सूना सूना लागे, आओ प्रभु हरषाये जीवन।
हरि हरि तुमको सुमरे हरपल, संध्या जाती देखो अब ढल।
पड़े द्वार पर हरि तुम लख लो, जाता जीवन होय यह सफल।

92

हरि तुम राखो लाज हमारी, जोगन बन मैं भई पुजारी।
निशदिन गाऊँ गीत तुम्हारे, नीर बह रहे तुझ पर बारी।
सुन बन्शी धुन तन मन नाचे, अनहद चहुँ दिशा में गूजे।
तुझे पुकारूँ प्यारे छलिया, आंख मिचौनी कर तू भागे।

चलते रहे तुम्हारे पीछे, कुछ न अब मोहि और सुहावे।
सकल सृष्टि के तुम हो मालिक, मिलता रहे प्यार पिव पावें।
सुखनन्दन तुम जग के पालक, देखो आँख उठा हम बालक।
करें अर्चना विधि ना जाने, दिल मेरा यह करता धक धक।

नहीं भूल तुम हमको जाना, जीवनदाता भाग्य विधाता।
तू ही एक सहारा मेरा, दीखो ना यह जी घबराता।
प्यार मिले छक नाचूँ रसिया, गिरे नीर मैं धोऊँ पैंया।
मिटूँ शमा पर परवाना बन, नहीं लजाऊँ विनती छलिया।

93

हरि हरि कहते बीते जीवन, तेरा नाम खिले हिय उपवन।
अगम अगोचर पार न तेरा, विनती करता हूँ हरि ले सुन।
सुखदाता तुम दुख भंजक हो, नाथ हरो तुम पीड़ हमारी।
दुर्गम पथ अनजानी राहें, नयन बहाये आंसू खारी।

जन्मो से मैं भटक रहा हूँ, प्यार हमें दो जिय खिल जाये।
नयनों के आंसू मुस्काये, प्रीति निरन्तर बढ़ती जाये।
सुपनों में बस तुम ही दीखो, सुपना सा जग मुझे डराये।
तुझ दर्शन को अंखियाँ तरसे, सुरति न विसरे नयन समाये।

जग में उलझा तुझे न पाया, झोली लेकर फिरता खाली।
करूणा सागर मेरे माली, दया मिले तो लगती लाली।
तुझे न भूलूँ वर दो ऐसा, डगमग करती मेरी नैया।
खेवट बन कर पार लगा दो, नाथ पडू मैं तेरे पैंया।

94

चाहा अच्छा बनना न बने, कितने पापों से हाथ सने।
कैसे तुमको प्रभु मैं पाऊँ, हम हार गये यह शाम ढले।
इस पाप पुण्य की रेखा को, मैं पार करूँ कैसे जानूँ।
पग पग पर हिंसा होती है, खाई यह पार करो मानूं।

सच्चा लगता यह जग सुपना, तुम बिन रोती मेरी अंखियाँ।
कैसे पहुंचूंगा मैं तुम तक, मैं अबल थाम मेरी बैयां।
झर झर झरते मेरे आँसू, न दोष मेरा इसको निरखो।
कठपुतली बन हम नाच रहे, मैं पांव पडू अंखिया देखो।

सारा तेरा कुछ ना मेरा, गिरते आँसू लो नमन मेरा।
इस नाट्य मंच पर नाच रहे, माया ने मुझको है घेरा।
जीवनदाता तुम ही पालक, जिय मेरा यह करता धक धक।
अंधियारी गलियों से बचा, मैं विनती करूँ तेरा बालक।

95

छिपा कहाँ हरि खोज जतन से, चल उड़ चल मन पार गगन के।
उस बिन रस ना आवे जग में, इन नयनों से आंसू टपके।
हरि बिन जीवन भी क्या जीवन, नयना बरसे जैसे सावन।
याद हरी की लागे प्यारी, जलूँ विरह में रहूँ न उस बिन।

ठोकर खाऊँ गिरूँ यहाँ पर, प्राण पुकारें आओ गिरधर।
तुम बिन मुझसे रहा न जाता, नीर गिराये अंखिया झरझर।
हरि हरि जपूँ नहीं कुछ सूझे, दिल की बात न कोई बूझे।
मेरे भाग्य विधाता हरि तुम, ज्योति जला कुछ मारग सूझे।

जीवन नदिया बहती जाये, नहीं कूल हाथों में आये।
सुपना सा सब बीता जाता, नयन बसो तू ही मन भाये।
जिसके दिल में तू रहता है, दूर भागती दुख की छाया।
नाचे हरि में सोवे हरि में, हरि सम्भाले फिर यह काया।

96

ओम कहो हरि ओम कहो मन, मुख से हरि हरि बोलो।
बिगडे तेरे काम बनेंगे, जीवन में रस घोलो।
हरि की महिमा गायें सारे, ऋषि मुनि और ज्ञानी।
सारा यह ब्रह्माण्ड नाचता, नयन बहाये पानी।

नफरत का संसार मिटेगा, हरि भज प्यार बढ़ेगा।
अंखियों से करूणा झांकेगी, हरि से चैन मिलेगा।
मन उसको तू भूल कभी ना, पार लगे ना नैया।
जीवनदाता भाग्य विधाता, तेरा वही खिवैया।

आशा के सुपनों में ना जी, दो पल का जीना है।
कहाँ हवा झोंका ले जाये, इसका पता नहीं है।
बन जा उसकी तू कठपुतली, गा ले गीत उसी के।
नहीं डराये रैना काली, सब है दास उसी के।

उसकी मर्जी आना जाना, ढलता देख सबेरा।
नाच यहाँ तू नाट्य मंच पर, क्या तेरा क्या मेरा।
मैं को छोड़ समर्पित हो जा, सब उसकी है लीला।
याद उसे कर दन्श मिटेंगे, कर मत मन तू मैला।

97

मोहि अपनी शरण में ले लो, जीवन का रस दे दो।
अज्ञानी हूँ तेरा बालक, तम को दूर भगा दो।
सारा है ब्रह्माण्ड तुम्हारा, पथ तू ही दर्शाये।
तेरी दुनिया रूप अनोखा, अंखियाँ भर भर आये।

आँखे देखें करूँ अचम्भा, सुख दुख खेल खिलाये।
कभी हँसाये कभी रूलाये, जिय मेरा तड़फाये।
देखूँ जग को आँख खोलकर, तुम बिन लगे न लाली।
नहीं भूल तू इस बगिया को, तू ही इसका माली।

तुम बिन मेरा जियरा तड़फे, कहाँ जाऊँ न दीखे।
करूँ अर्चना हाथ जोड़कर, पथ तेरा हम देखे।
शीश झुकाये खड़े द्वार पर, नयना मेरे बरसे।
इस जीवन की तू ही आशा, प्राण तुझी को तरसे।

98

तुम कहाँ छिपे मेरे छलिया, ढूंढे तुमको मेरे नयना।
खो कर तुमको हुआ बाबला, सुन लो विनती मानो कहना।
जीवन की तू ही आशा है, एक चाह बस मेरी तू है।
कृपा दृष्टि जब तेरी होवे, संकट मिटते फिर पल में हैं।

हरि प्रीति बढ़े हरपल मेरी, नजरों को नहीं चुराना तुम।
अंधियारा है नाथ अबल मैं, इस को दूर भगाना हरि तुम।
नयन बहे तेरी यादों में, जलन मिटाते जो दिल की है।
जाम यहाँ पीऊँ विरहा के, प्राण तरसते मिटने को है।

नयना खोलो देखो हमको, बालक तेरे हम रोते है।
धुन बन्शी सुन मीरा नाची, नाचे हम भी दिल चाहे है।
नमन करूँ तेरे चरणों को, जपूँ सदा मैं इस जीवन में।
जग की प्रीति लगे सब झूठी, बस जाओ प्रभु इन नयनन में।

99

क्यों भागे मन पीछे पीछे, वह छोड़ गये ना सुधि को ले।
अंखियां तेरी हरपल भीगें, ना रूक देखें हरि में जी ले।
जग निर्मोही ना प्रीति लगा, वह धन्य हुआ हरि में खोया।
जीवन उसका ही हुआ सुफल, जो यादें ले उसकी रोया।

सुपने सारे ही टूट रहे, यह देख देख कर बिलख रहे।
मन भटक भटक जाता हरपल, समझे ना दिल में टीस बहे।
हरि ध्यान लगा अन्तस में वह, निज को तू देख छिपा है वह।
मन प्रीति बढ़ा ले उससे ही, कट जाये मग सुखदायक वह।

हरि जप लो जानो वही जपे, तू नहीं यहाँ यह शाम ढले।
हरि में डूबो हरि को गाओ, बह जा ना तेरी एक चले।
तू एक लहर बहती गंगा, गा ले हँस ले बस यही सफर।
तू ध्यान लगा हरि में पागल, ले जाती यह ना करो फिकर।

100

चल चल गिरा मैं थक चुका, बरसे नयन यह राम।
कर्मों का खेल जानूँ न, तुमको पुकारूँ राम।
सब कुछ यहाँ तू ही प्रभु, तुम बिन तड़फता राम।
अज्ञान का पर्दा पड़ा, इसको उठा ले राम।

चरणों में दे मुझे जगह, सुख से कटे पथ राम।
नैया हमारी डोलती, खेवट बनो हे राम।
उल्लास जीवन का तुही, दुख में न डालो राम।
दुख दूर कर करूणा दिखा, सागर दया का राम।

तपती धरा जब ताप से, तू ही बरसता राम।
माता पिता सब कुछ तुही, मुझे सम्भालो राम।
हे राम इस दिल में बसो, ना बीत जाये शाम।
आये हम शरण तेरी, वर भक्ति का दो राम।

101

उड़ता जावे मन ना ठहरे, जतन करो प्रभु तुमको पावें।
दीनबन्धु तुम जग के पालक, चाह प्यार तेरा हम पावें।
सकल सृष्टि के तुम हो मालिक, गया हार ना पहुँचा तुम तक।
शक्तिप्रदाता अबल नाथ मैं, बल दो पहुँचू तुम चरणो तक।

नयना तेरी राह निहारें करो नहीं प्रभु अब तुम देरी।
जीवन का आनन्द तुही है, टूटी जाती जीवन डोरी।
इन नयनों में तुम बस जाओ, नहीं नाथ मुझकों तड़फाओ।
बालक तेरे तुम ही सर्जक, प्रीति बढ़े वह पाठ सिखाओ।

नाच नचावें लहरें हरपल, जियरा मेरा करता धक धक।
पार लगे ना तुम बिन नैया, क्यों ना पहुँचे आँसू तुम तक।
करूँ अर्चना प्रभु जी तेरी, मात पिता गुरू सखा तुम्ही हो।
खोई वह मुस्कान तुम्ही हो, इस जीवन के प्राण तुम्ही हो।

102

जीवन तेरा ना यह मेरा, सुख से नौका पार लगा दे।
प्यार बिना ना खिलता जीवन, सबके डर में प्यार जगा दे।
दुख से पीड़ित सारी धरती, पग पग कांटे राह दिखा दे।
फूल खिलाये जग में तूने, प्रभु शान्ति का पाठ सिखा दे।

करें अर्चना प्रभु जी तेरी, नीर नयन से मेरे आता।
शक्तिपुंज तुम अबल नाथ मैं, बल को देना भाग्य विधाता।
सकल सृष्टि के तुम हो स्वामी, फूल तेरी बगिया के मालिक।
तेरे बिन ना लगती लाली, तुझे न भूलें मेरे मालिक।

नाच नचावे हम कठपुतली, तपती धरती तू ही बरसे।
जीवन डोरी हाथ तुम्हारे, याद तुझे कर जियरा हरषे।

103

हरि तुम मोहि नाहीं विसारो, लाज मेरी प्रभु तुम ही राखो।
इस जीवन को देने वाले, बहते नीर नयन को देखो।
नाथ अबल हम बालक तेरे, घबराता दिल करता धक धक।
देखो अब तो भाग्य विधाता, अंखियां हारी तुमको तक तक।

गाऊँ तेरे गीत सदा ही, गूंजे बंशी की धुन मन में।
नयन बसे बस मूरति तेरी, जाप करूँ हर पल इस मन में।
दास तुम्हारा तुम न रूठो, जानूँ ना कर्मों के बन्धन। दीखे
कुछ ना रोये मनुआ, पथ दिखला दो छूटे क्रन्दन।

नयन बरसते तुझे पुकारे, जीवन तुम बिन कौन संवारे?
बस जाओ तुम दिल में मेरे, सांस सांस हरि तुझे उचारे।
सुख दुख को तुम देने बाले, समझ न पाये कुछ मतवाले।
मेरी नैया खे दे नाविक, डगमग डोले तुही बचाले।

-: अनुक्रम :-

क्र0	कविता का नाम	पृष्ठ सं0
1.	चले चल कर थक गये हम।	1
2.	गमों के बादल हटाना।	1
3.	जानूं कुछ ना करूँ अर्चना।	2
4.	सांसे हैं जीना ही होगा।	2
5.	हरि तुम बिन यह नयना रोयें।	3
6.	क्या सोंचे मन तू है पागल।	3
7.	दुख यहाँ करना नहीं मन।	4
8.	तुम बिन हमको कुछ ना दीखे।	4
9.	कितने फूल खिले मुर्झाये।	
5		
10.	हरि तुम बिन यह जियरा भटके।	5
11.	जी नहीं लगता हमारा।	6
12.	मन बैरागी हुआ बाबरा।	6
13.	जीत तेरी हार तेरी।	7
14.	किसको कहते यहाँ पर।	7
15.	आना जाना इस दुनिया में।	8
16.	जीवन पथ पर चल चल हारा।	8
17.	बिना तुम्हारे प्राण क्यों।	9
18.	अबल हम तुम कृपा करना।	9
19.	इस जीवन को देने बाले।	10
20.	मन अपना कैसे बहलाऊँ।	10
21.	हरि प्रीति बढ़ा तू भूल जगत।	11
22.	हरि बिन चैन नहीं मन पावे।	11
23.	दिन आता है वह जाता है।	12
24.	क्या सोंचे पागल।	12
25.	तुम्हारी शरण में।	13

क्र०	कविता का नाम	पृष्ट सं०
26.	मन रोये क्यों।	13
27.	राम तेरी हम शरण है।	14
28.	जगत पालक हो रचयिता।	14
29.	चलते यहाँ सब जा रहे।	15
30.	जग में भटक रहा जग मालिक।	15
31.	चरण पड़े हम नाथ थाम लो।	16
32.	जो भी पल है देख सामने।	16
33.	हरि ओम जपो सुमरो हरपल।	17
34.	हे ईश कृपा करना हम पर।	17
35.	ईश तेरे दास हम है।	18
36.	इतनी बात बनाते हम हैं।	18
37.	तेरी राह निहारूँ भगवन।	19
38.	आयेगा कोई जायेगा।	19
39.	किसको कहनी अपनी पीड़ा।	20
40.	कहाँ छिपे सांवरिया तू मिल।	20
41.	खेल यहाँ दो दिन का सारा।	21
42.	जी नहीं लगता जले दिल।	21
43.	दिन आता है ढल जाता है।	22
44.	आंसू से भीगी आंखें है।	22
45.	मन शान्त नहीं हो पाया ।	23
46.	मन गा ले क्या गाना चाहे।	23
47.	तू साथ मेरे ज्ञान दे।	24
48.	संसार छूटा ना मिला।	24
49.	तुझे मनाऊँ कैसे प्रियतम।	25
50.	हे हरि मैं तेरे गुण गाऊँ।	25

नयना बरसे

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
51.	मन रोये तुझे सुनाये क्या।	25
52.	कितना दुख है कितनी पीड़ा।	26
53.	पीड़ा दिल की कही न जाये।	26
54.	छन छन छन छन बाजे घुंघरू।	27
55.	सुख का दाता नाम उसी का।	27
56.	मन उदास वह तुझे बुलावे।	28
57.	हरि हरि जप ले जग में जी ले।	28
58.	खेल यहाँ सब कुछ पल के हैं।	29
59.	देखो वह कौन इशारा है।	29
60.	सांस सांस में जप मन पागल।	30
61.	मन उड़ उड़ तू कहाँ जा रहा।	30
62.	हरि तुम बिन मन चैन न पावे।	30
63.	हरि ओम जपो हरि ओम जपो।	31
64.	बालक तुम्हारे हम।	31
65.	सावन बरसे रिमझिम रिमझिम।	32
66.	हरि हरि कहो कटेंगे सब पल।	32
67.	हरि ओम कहो हरि ओम कहो।	33
68.	हरि पीड़ हम किसको कहें।	33
69.	नीर बहे हरि मुझको लख लो।	34
70.	ज्ञानी मुनि जन करें अर्चना।	34
71.	हरि ओम जपो हरि ओम जपो।	35
72.	शरण तुम्हारी लाज राखो।	35
73.	ले चल पार लगा दे नैया।	36
74.	हरि ओम कहो हरि ओम कहो।	36
75.	जीवन बहता अपनी धुन में।	37
76.	विनती करूँ हरि सुख का दाता।	37

नयना बरसे

क्र०	कविता का नाम	पृष्ट सं०
77.	हरि ओम जपो संताप मिटे।	38
78.	नभ में बैठे देख रहे तुम।	38
79.	तुम बिना जाये कहाँ हम।	39
80.	हरि जप मन को शान्ति मिलेगी।	39
81.	ढूढते तुमको फिरें हम।	40
82.	मन भज ले तू हरि का नाम।	40
83.	हरि बिन जीवन जिया न जाये।	41
84.	प्यार के दो जाम पीता।	41
85.	हरि बोलो हरि बोलो मनुआ।	42
86.	हरि से जिसने प्रीति बढ़ाई।	42
87.	जीवन की यह शाम पुकारे।	43
88.	हरि चरणों में प्रीति लगा मन।	43
89.	घट घट बसता देख रहा सब।	44
90.	थके यहाँ हम सुर ना बजते।	44
91.	प्यार मिले महके यह बगिया।	45
92.	हरि तुम राखो लाज हमारी।	45
93.	हरि हरि कहते बीते जीवन।	46
94.	चाहा अच्छा बनना न बने।	46
95.	छिपा कहाँ हरि खोज जतन से।	46
96.	ओम कहो हरि ओम कहो मन।	47
97.	मोहि अपनी शरण में ले लो।	47
98.	तुम कहाँ छिपे मेरे छलिया।	48
99.	क्यों भागे मन पीछे पीछे।	48
100.	चल चल गिरा मैं थक चुका।	49
101.	उड़ता जावे मन ना ठहरे।	49
102.	जीवन तेरा ना यह मेरा।	50
103.	हरि तुम मोहि नाहिं बिसारो।	50